किस्सा विशेषांक पराग

जून १९७८ अंक २४२



इस बार

मजेदार किस्से

[illegible] : [illegible] 5
[illegible] : [illegible] 8
[illegible] : [illegible] 15
[illegible] : [illegible] 20
[illegible] : [illegible] 24
[illegible] का अर्थ : [illegible] 31
[illegible] : [illegible] 34
[illegible] का :
कन्हैयालाल नंदन 35
[illegible] : [illegible] 47
[illegible] की करामात : मुबारक अली 49
[illegible] : [illegible] 56
[illegible] : [illegible] 63

[illegible]

[illegible] : [illegible] 52

[illegible]

[illegible] : [illegible] 4
[illegible] : [illegible] 13
[illegible] : [illegible] 41
[illegible] : [illegible] 67
चिड़िया रानी : सतीश आलोक 67
ईना-मीना : राजेशकुमार पुरी 67

चित्र व कार्टून कथाएं

छोटू-लंबू : [illegible] 28; बिल्लू : प्राण 42;
सचित्र कथा : 72

मुखपृष्ठ के छायाकार : संतोष कुमार

संपादकीय पता :
10 दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

संपादक
कन्हैयालाल नंदन
उप संपादक
लक्ष्मीचंद्र गुप्त
राजेश्वर गंगवार
ज्योत्सना आनंद
सज्जा : रवि शर्मा

किस्से का किस्सा

दादी का हो या नानी का,
राजा का हो या रानी का,
किस्सा बस किस्सा होता है.
बड़े सुनते हों या बच्चे,
किस्से झूठे हों या सच्चे,
सबका ही हिस्सा होता है.
कभी हंसाता, कभी रुलाता,
दूर भगाता, पास बुलाता,
किस्सा क्या किस्सा होता है!

□ नईम



छाया : बालकृष्ण

प्यारे नन्हे मुन्ने पाठको,

तुमने ऊपर की कविता को पढ़ लिया न! यह कविता हिंदी के बहुत मशहूर कवि नईम ने 'पराग' के लिए भेजी थी. उनका कहना है कि 'किस्सा बस किस्सा होता है.' लेकिन क्या किस्सा पढ़कर तुम्हें कुछ भी सीख होती है? नहीं, ऐसा नहीं होता. इन किस्सों में बहुत कुछ होता है, जो सबको सिखाता है. इसलिए अपने यहां किस्सा कहने की बड़ी पुरानी परिपाटी है. सदियों की छुट्टियों में पढ़ने को यह किस्सा विशेषांक हम इसी आशा के साथ दे रहे हैं कि किस्से का मजा तो लो ही, उनमें छिपे हुए असली मकसद को भी पहचानो. हमें इसके बारे में तुम अपनी राय लिखना न भूलना.

एक खुशखबरी भी सुनो. अब तुम्हारा 'टिल्लू' दक्षिण भारत में भी धमाचौकड़ी मचाएगा. उसकी मलयालम भाषा में वहां भी जादू जगाने की सोच ली. बंगलौर से निकलने वाली कन्नड़ की मशहूर पत्रिका 'मयूर' में 'पराग' के अंकों से लेकर टिल्लू को नियमित छापना शुरू कर दिया है. मलयालम में भी टिल्लू पहुंचने वाला है.

एक और खुशखबरी सुनाऊं? एक दीदी जी भाग गईं. हां, खुशखबरी है, क्योंकि यह दिलचस्प उपन्यास 'भागी हुई दीदी' अगले दो अंकों में 'पराग' में आ रहा है. लेखक हैं के. पी. सक्सेना.

अब तक के लिए टा टा .....

प्यार से तुम्हारा



छाया : बी. पी. [illegible]

नटनी की चबूतरा

यादवेंद्र शर्मा 'चंद्र'

बहुत समय पहले की बात है. मेवाड़ में एक राणा राज्य करता था. वह बहुत ही दयालु और परोपकारी था. उसे खेल-तमाशे देखने का बड़ा शौक था. उसके दरबार में दूर-दूर के बाजीगर आकर तमाशा दिखाते थे.

एक दिन मेवाड़ में एक नट परिवार आया. उस परिवार में एक मुखिया, उसकी स्त्री, दो बेटे और एक बेटी थी. बेटी का नाम गलकी था. गलकी बहुत ही सुंदर थी. उसके अंगों में इतनी लचक थी कि वह उन्हें जैसा चाहती, तोड़मरोड़ सकती थी.

गलकी चमड़े की बनी रस्सी पर इतना आकर्षक नृत्य करती थी, जितना दूसरी नटनियां जमीन पर भी नहीं कर सकतीं. उसके नृत्य को देखकर बड़े-बड़े लोग दांतों तले उंगली दबा लेते थे. कुछ ही दिनों में उसकी चर्चा सारे शहर में होने लगी.

फिर तो गलकी के खेल-तमाशे बड़े-बड़े ठाकुरों और सामंतों की हवेलियों व डेरों में होने लगे.

एक दिन राणा का दरबार लगा हुआ था. खेल-तमाशों की चर्चा चली तो चूड़ावत सरदार ने कहा—बड़ो हुकम! आजकल हमारे शहर में एक चमत्कारी नटनी आयी हुई है. वह रस्सी पर इतना अद्भुत नाच करती है कि लोग देखते रह जाते हैं.

राणा ने झट से पूछा—कौन है वह?

इस पर दूसरे दरबारी ने कहा कि एकलिंग दीवाण जी, वह एक नटनी है. नाच की तो वह महारानी है.

राणा ने तुरंत हुक्म दिया कि उसे बुलाया जाये.

महाराणा का हुकम पाते ही कुछ सेवक उस नट परिवार को बुला लाये. गलकी को अन्नदाता के सामने हाजिर किया गया.

महाराणा ने उसे गौर से देखा और कहा—नटनी, तू क्या नाच दिखायेगी?

गलकी अपने फन में माहिर थी. महा-



गाता पेड़ बोलता पक्षी

□ गोविंद झा

फारस के एक सुल्तान का नाम था खुसरोशाह. एक रात रिआया का हाल जानने के लिए भेष बदलकर वह अपने वजीर के साथ गश्त लगा रहा था. रात काफी बीत चुकी थी. पर एक घर में अब भी रोशनी थी. सुल्तान ने एक छेद से झांककर देखा. तीन लड़कियां बैठी बातचीत कर रही थीं. एक लड़की कह रही थी कि वह तो रोटी बनाने वाले नानबाई से निकाह करेगी. दूसरी लड़की की इच्छा बड़े शाही बावर्ची से निकाह करने की थी. तीसरी लड़की ने कहा—मैं तो सुल्तान से निकाह करूंगी. यह सुनकर दोनों बहनें जोर से हंस पड़ीं. सुल्तान वापस चला गया.

दूसरे दिन सवेरे उन तीनों लड़कियों की पेशी हुई. सुल्तान ने उन्हें रात की बातचीत बता दी. लज्जा से उनकी गर्दन झुक गयी. सबसे बड़ी लड़की ने कहा—खता माफ हो, हम तीनों बहनें हैं. दिन भर की मेहनत से थककर आपस में दिल बहला रही थीं. पर सुल्तान ने उनकी एक नहीं सुनी. सबसे बड़ी बहन का निकाह रोटी बनाने वाले से और उससे छोटी का निकाह शाही बावर्ची के साथ कर दिया गया और शाही रस्मोरिवाज के साथ छोटी बहन का निकाह सुल्तान के साथ हो गया. अब वह सुल्ताना बन गयी.

सुल्ताना बड़ी सुंदर और सुशील थी. सभी उसकी तारीफ करने लगे. सुल्तान को इससे बेहद खुशी हुई. वह हर बात में सुल्ताना से राय लेने लगा. बड़ी बहनें यह देख-सुनकर जलने लगीं. उनके कलेजे पर सांप लोटने लगा. वे सुल्ताना को जलील करना चाहती थीं. उन्होंने एक दुष्ट बुढ़िया से सलाह-मशविरा किया. बुढ़िया ने उनके कान में अपनी योजना बता दी.

साल भर बीत गया. सुल्ताना को बच्चा होने वाला था. खबर सुनते ही दोनों बहनें खिल उठीं. योजना पूरी होने के आसार दिखायी पड़ने लगे. दोनों बहनें सुल्तान के पास गयीं. बधाई देते हुए उन्होंने कहा—हम तीन बहनों में अल्लाह ने सबसे पहले सुल्ताना को यह दिन दिखाया है. उसकी देख-रेख हम लोग ही करेंगी. कोई और मुआ नजर न लगा दे! टोना-टोटका कर दे! भला और का क्या विश्वास! सुल्तान उनकी चिकनी-चुपड़ी बातों में आ गया. उसने उन्हें सुल्ताना की देख-रेख की इजाजत दे दी.

कुछ ही दिनों में सुल्ताना को लड़का हुआ. बुढ़िया पहले से तैयार थी. एक कुत्ते



के पिल्ले को लाकर उसने सुल्ताना के पास रख दिया. लड़के को एक पेटी में रखकर नदी में बहा दिया. दोनों बहनें हाथ जोड़कर सुलतान के सामने खड़ी हो गयीं. कहने लगीं—हुजूर, खता माफ हो. सुलताना ने एक पिल्ले को जन्म दिया. सुलतान क्रोध और अपमान से थर-थर कांपने लगा. उसने सुलताना को महल से निकाल देने का फरमान जारी कर दिया. दोनों बहनें मन ही मन खुश होने लगीं.

तभी उसके वजीर ने कहा—हुजूर, गुस्ताखी माफ, जहांपनाह का दु:ख वाजिब है. पर इसमें सुलताना का क्या कसूर, यह तो कुदरत की देन है. बात सुलतान को जंच गयी. उसने सुलताना को माफ कर दिया. दोनों बहनें फक्क-सी रह गयीं.

उधर पेटी बहती हुई काफी दूर निकल गयी. शहर के बाहर सुलतान का बगीचा था. उसके करीब ही कोतवाल का घर था. कोतवाल सुबह-सुबह हवाखोरी के लिए निकला था. उसकी नजर पेटी पर गयी. उसने माली को बुलाकर पेटी निकलवा ली. पेटी को खोलकर देखा. उसमें एक फूल-सा लड़का था. बच्चा जीवित था.

कोतवाल के कोई बच्चा नहीं था. इसे भगवान की देन समझकर कोतवाल की बीवी ने खुशी से अपने आंचल में छिपा लिया. उसका नाम रखा बहमन.

शाही महल में सुलताना की अब वह इज्जत नहीं रही. कुछ समय बाद फिर उसे बच्चा होने वाला था. यह खबर लगते ही दोनों बहनों ने फिर से अपना जाल बिछाना शुरू किया. फिर सुलताना को लड़का हुआ. बुढ़िया ने बड़ी मुस्तैदी से उसे भी पेटी में रखकर नदी में बहा दिया. सुलताना के नजदीक उसने बिल्ली का बच्चा रख दिया. सुबह-सुबह सुलतान ने देखा. वह जल-भुन कर राख हो गया. उसने सुलताना को महल से निकल जाने का हुक्म दे दिया. पर फिर वजीर की बात मानकर हुक्म वापस ले लिया.

नदी में बहती हुई पेटी फिर माली को



मिली. उसने पेटी से लड़के को निकाल कर कोतवाल को दे दिया. कोतवाल को बड़ा ताज्जुब हुआ. इस लड़के का नाम उसने परवेज रखा.

तीसरी बार भी सुलताना के साथ वही हुआ. दुष्टता में फिर दोनों बहनें बाजी मार ले गयीं. इस बार सुलताना को लड़की हुई थी. उसे भी दोनों ने पेटी में रखकर नदी में बहा दिया. एक मरे हुए बच्चे को सुलताना के पास रख दिया. सुलतान को खबर दे दी गयी. अब सुलतान अपने क्रोध को दबा न सका. उसने सुलताना को आम मस्जिद के सामने एक छोटे-से घर में कैद कर दिया. खाने के लिए उसे रूखी-सूखी रोटी मिलने लगी. दिन-भर वह खिड़की के सामने बैठी रहती. दोनों बहनों का कलेजा ठंडा हो गया.

पेटी फिर माली को मिली. लड़की को भी उसने कोतवाल के हवाले कर दिया. लड़की बड़ी सुंदर थी, कोमल और मासूम परी जैसी. कोतवाल ने उसका नाम रखा परीजादी. उसने ज्ञान-विज्ञान के साथ उन तीनों बच्चों को अस्त्र-शस्त्र की भी शिक्षा दिलवायी.

जब कोतवाल बूढ़ा हो गया, तो उसने सुल्तान की सेवा से छुट्टी ले ली. उसने शहर भी छोड़ दिया. शहर से काफी दूर जंगली इलाके में उसने एक मकान बनवाया. उसका नाम रखा 'परीजादी महल'. इसकी खूबसूरती की शोहरत चारों ओर फैल गयी. दूर-दूर से लोग देखने आते. पर वह इस सुख को भोगने के लिए अधिक दिन रह न सका. थोड़े ही दिनों में उसकी बीवी भी चल बसी.

किसी तरह सुल्तान के बच्चों के जीवित होने की खबर उन दोनों बहनों को लग गयी. वे बेचैन हो उठीं. इस बार उन्होंने एक जादूगरनी का सहारा लिया.

एक दिन वह जादूगरनी बूढ़ी औरत का भेष बना कर परीजादी महल में आयी. उस समय बहमन और परवेज शिकार खेलने गये थे. उस बुढ़िया ने महल देखा और उसकी तारीफ करने लगी. फिर बोली कि अगर तीन चीजें इसमें और होतीं तो यह महल सबसे आश्चर्यजनक होता. उसने बताया कि वे चीजें हैं—गाता पेड़, बोलता पक्षी और सुनहरा फव्वारा. परीजादी ने इन चीजों का पता-ठिकाना बताने के लिए उसकी मिन्नतें कीं. बुढ़िया ने कहा—वह जगह तो यहां से बहुत दूर है—हिंदुस्तान और फारस की सरहद पर. बीस दिन का रास्ता है. वहां पर एक दरवेश मिलेगा. वह सब कुछ बता देगा. यह आग लगाकर बुढ़िया दोनों भाइयों के आने से पहले ही लौट गयी.

बहमन और परवेज शिकार से लौटे तो परीजादी उदास बैठी थी. दोनों ने उस की उदासी का कारण पूछा. परीजादी ने सब कुछ बता दिया. बहमन बड़ा था. उसने इस काम को पूरा करने का बीड़ा उठाया.

अगले दिन बहमन चल पड़ा. परीजादी की आंखों में आंसू भर आये. उसने कहा — मेरे प्यारे भैया, छोड़ दो, तुम मत जाओ. यह काम जोखिम से भरा है. बहमन ने उसे धीरज बंधाते हुए कहा कि मेरी प्यारी बहना, जोखिम से घबराना कायरता है. जिसके हाथ में तलवार हो और भुजाओं में बल, वह सब खतरों को झेल लेगा. मैं तुम्हें यह कटार देता हूं. इसे देखती रहना. जिस समय इस पर खून की बूंद छलक आये, समझ लेना मैं किसी मुसीबत में फंस गया. इतना कह


आप
इनमें से
किस
पुरुष
जैसे
दिखते हैं?
आप अपने शरीर को शक्तिशाली मर्दाना बनाइए—
सिर्फ १४ दिन में परिणाम देखिए—
अन्यथा दाम न दीजिए!
अब बुलवर्कर के साथ
७५ रु. मूल्य की मुफ्त भेंट

कर बहमन घोड़े पर सवार हो चल पड़ा.

उन्नीस दिन तक वह चलता रहा. बीसवें दिन उसे दरवेश मिला. बहमन ने उससे पता-ठिकाना पूछा. पहले तो दरवेश ने उसे जाने से मना किया. पर जब वह न माना, तो दरवेश ने उसे एक गेंद दी. कहा—घोड़े पर चढ़कर हिंदुस्तान की सरहद की तरफ फेंकना. जहां गेंद रुक जाये, वहीं उतर जाना. पहले अपने घोड़े को बांध देना. सामने काला पहाड़ दिखायी देगा. तुम्हारे इर्द-गिर्द काले-काले ढेरों पत्थर दिखायी पड़ेंगे. उनमें से तरह-तरह की

'सुनाई कम देता है? गोलियां दूंगा. पंद्रह दिन में एक बार हजामत कराने के बाद एक गोली खाना.'



व्यंग्यचित्र : [illegible]

डरावनी आवाजें आयेंगी. पर तुम डरना नहीं. आगे बढ़ते ही जाना. पहाड़ के ऊपर सबसे पहले तुम्हें बोलते पक्षी का पिंजरा मिलेगा. उसे उठा लेना. बस सारी मुसीबत खत्म. अगर तुमने मुड़कर पीछे देखा तो तुम भी काला पत्थर बन जाओगे.

बहमन गेंद लेकर घोड़े पर चढ़ गया. जोर से उसने गेंद फेंकी. गेंद काले पहाड़ के नीचे जाकर रुक गयी. बहमन वहीं घोड़े से उतर गया. एक जगह घोड़े को बांधकर पहाड़ पर चढ़ने लगा. थोड़ी ही दूर गया होगा कि भयावनी आवाजें आने लगीं. बहमन को लगा कि उसके कान के परदे फट जायेंगे. पर वह बढ़ता ही रहा. वह लगभग पहाड़ पर चढ़ चुका था. सामने ही बोलते पक्षी का पिंजड़ा था. खुशी से उसका मन नाच उठा. पर तभी पीछे से एक आवाज ने उसे चिढ़ाया—कायर! कपूत! क्रोध से वह सुध-बुध खो बैठा. मुड़कर उसने तलवार से वार किया. बस, मुड़ते ही वह पत्थर बन गया. इसी समय परीजादी ने कटार पर खून की बूंदें देखीं. वह फूट-फूटकर रो पड़ी.

बड़े भाई के अधूरे काम को पूरा करने की जिम्मेदारी परवेज ने ले ली. परीजादी ने लाख मना किया, पर वह नहीं माना. उसने परीजादी को मूंगे का एक हार दिया और कहा—जब मूंगे के दाने आपस में जुड़ जायें तो समझ लेना मैं भी मुसीबत में फंस गया. इतना कहकर वह चल पड़ा. बीस दिन तक चलता रहा. उसी तरह दरवेश से मुलाकात हुई. उससे सब कुछ सुनकर वह भी काले पहाड़ पर चढ़ने लगा. पर परवेज भी कायर, कपूत शब्द को सह न सका. पीछे मुड़ गया. वह भी काला पत्थर बन गया. इधर मूंगे के दाने आपस में चिपक गये. लेकिन परीजादी घबरायी नहीं. अगले दिन वह चल पड़ी.

चलते-चलते परीजादी भी दरवेश के पास जाकर रुक गयी. उसने परीजादी को मना किया. पर वह अपनी जिद पर डटी रही. हारकर दरवेश ने सब कुछ बता दिया. इस पर परीजादी ने कहा—इतनी-सी बात है! और वह चल पड़ी.

जहां गेंद रुकी, वहां उसने घोड़े को बां

दिया. झोली से रुई निकालकर उसने दोनों कानों में ठूंस ली. एक कपड़े से दोनों कानों पर पट्टी बांध ली. फिर वह काले पहाड़ पर चढ़ने लगी. आवाजें उठने लगीं. पर उनका शोर ही कानों तक जाता था. परीजादी उनका मतलब नहीं समझी.

आखिर वह पिंजड़े तक पहुंच ही गयी. पिंजड़े को उसने हाथ में ले लिया. कान पर से पट्टी खोल दी. रुई के फाहे निकाल दिये. बोलते पक्षी ने उसका स्वागत किया. परीजादी ने उससे सुनहरे फव्वारे और गाते पेड़ का पता पूछा. पक्षी उसे वहां ले गया. वह देखकर दंग रह गयी. फव्वारा १५ गज ऊंचा उठता था. उसमें सोने की झलक दिखायी पड़ती थी. इतने बड़े फव्वारे को वह कैसे ले जा सकती थी.

वह असमंजस में पड़ गयी. बोलते पक्षी ने कहा कि इसका पानी एक शीशी में भर लो. अपने बगीचे के फव्वारे में यह पानी मिला देना. वह फव्वारा ऐसा ही बन जायेगा. परीजादी ने वैसा ही किया.

फिर वह गाते पेड़ के पास गयी. उस पर संसार के तमाम पक्षी बैठे मीठी आवाज में गा रहे थे. बोलते पक्षी ने उस पेड़ की एक टहनी तोड़ लेने के लिए कहा. बगीचे में लगा देने से वह एक ही दिन में ऐसा ही बन जायेगा. परीजादी ने वैसा ही किया. सब चीजें मिल जाने के बावजूद उसकी आंखों में आंसू भर आये. पक्षी समझ गया. उसने कहा—रोने की जरूरत नहीं. सामने के घड़े को उठा लो. उसमें पानी भरा है. वे दोनों काले पत्थर तुम्हारे भाई हैं. उनपर यह पानी छिड़क दो. परीजादी ने वैसा ही किया.

उसके दोनों भाई जी उठे. फिर वे सभी काले पत्थरों पर पानी छिड़कते हुए

गर्मी के दिन आये

लगा ऊंघने मौसम फिर
दोनों टांगें फैलाये.
फिर से गरमी के दिन आये.

हवा बांटती फिरती घर-घर
धूल भरी सौगातें
उमस भरी हो गयीं अचानक
तारों वाली रातें
मच्छर बीन बजाकर
अनभाया संगीत सुनाये.
फिर से गरमी के दिन आये

कच्ची दीवारों में फिर से
चटकी नयी दरारें
नहीं दीखतीं अब बगुलों की
उड़ती हुई कतारें
खेत-खेत औ डगर-डगर
सूरज गरमी बरसाये
फिर से गरमी के दिन आये.

□ कन्हैयालाल वाजपेई

नीचे उतर आये. वे सभी जी उठे और अपने घर की ओर चल पड़े. परीजादी भी अपने भाइयों के साथ घर लौट आयी. उसने बगीचे में टहनी को रोप दिया. टहनी देखते ही देखते पेड़ बन गयी. उसी तरह पेड़ से संगीत लहराने लगा. फिर उसने बगीचे के फव्वारे में शीशी का पानी मिला दिया. फव्वारा १५ गज तक उछल पड़ा और सुनहरा बन गया.

बहमन और परवेज फिर से शिकार खेलने जाने लगे. वहीं एक दिन सुलतान

में उनकी मुलाकात हो गयी. दोनों ने उसे सलाम किया. सुलतान ने खुश होकर उन दोनों का परिचय पूछा. बहमन ने बताया —जहांपनाह, हम दोनों भाई हैं, हमारी एक बहन भी है. हम सब कोतवाल के बच्चे हैं. उन्होंने कहा था—सुलतान और देश की सेवा करना. इसी लिए उन्होंने हमें अच्छी शिक्षा दिलायी. जहांपनाह की सेवा में हम लोग कोई चूक नहीं करेंगे.

सुलतान बहमन की बातों से बहुत खुश हुआ. उसने उनकी वीरता की परीक्षा ली. उसने बहमन के हाथ में भाला दिया

व्यवहार

एक भिक्षु से किसी ने पूछा, "तुम बस्तियों में बाहर क्यों नहीं निकलते?"

भिक्षु ने कहा, "बस्तियों में मेरे साथ कौनसा अच्छा सलूक होता है, जो मैं गलियों में भी बाहर निकलूं!"

□ हरकेश [illegible]

और परवेज को तीर-कमान. दोनों ने अपने सधे हाथ का कमाल दिखा दिया. उनकी दिलेरी ने सुलतान का दिल जीत लिया.

एक दिन सुलतान उन दोनों को अपने महल में ले गया. उनके शील और आचरण ने सबका दिल जीत लिया. चलते समय बहमन ने सुलतान को अपने यहां आने का न्योता दिया. सुलतान ने अगले ही दिन आने का वादा कर लिया.

बहमन ने यह बात परीजादी से कही. वह सोच में पड़ गयी. बोलते पक्षी ने कहा कि इसमें चिंता करने की कोई बात नहीं. सुलतान को ककड़ी की खीर बड़ी पसंद है. उसे जरूर बनवाना. पर ककड़ी के हर टुकड़े में मोती के दाने भर देना.

सुलतान के स्वागत की तैयारी पूरी हो गयी. आने भर की देरी थी. आते ही परी-जादी ने बड़े अदब से उसे सलाम किया.

परीजादी ने पहले उसे अपना महल दिखाया. फिर बगीचे में ले गयी. सुनहरे फव्वारे को देखकर सुलतान दंग रह गया. उसने पूछा—क्या यह पिघला सोना है? परीजादी ने कहा—इसकी एक लंबी कहानी है. बता दूंगी. वहां से परीजादी सुलतान को गाते पेड़ के पास ले गयी. संगीत की मधुर आवाज सुनकर सुलतान मोहित हो उठा. फिर वे लोग बोलते पक्षी के पास आये. पक्षी ने कहा—सुलतान का स्वागत है. जहांपनाह, शाही-रस्मो रिवाज से नावाकिफ इन बच्चों की खता माफ करें. सुनकर सुलतान खुश हो गया.

खाना परोसा गया. ककड़ी की खीर देखकर सुलतान खुश हो उठा. खाने लगा तो देखा, ककड़ी में मोती भरे थे. वह सोच में पड़ गया. उसने कहा—ककड़ी की खीर तो ठीक है. पर ककड़ी में मोती का भरा जाना कुछ अजीब-सा लगता है. इसे तो गले के नीचे नहीं उतारा जा सकता.

बोलते पक्षी ने कहा—हुजूर, खता माफ हो. जब किसी औरत के पेट से कुत्ते और बिल्ली के बच्चे के जन्म लेने की बात को गले उतारा जा सकता है, तब यह तो मामूली बात है.

सुलतान थोड़ी देर तक पशोपेश में रहा. उसके शक को सहारा मिला. फिर भी उसने कहा—सुलताना की बहनों ने ही तो कहा था. अपनों की बात पर कैसे शक किया जा सकता है?

इस पर पक्षी ने कहा—सुलतान ऐशो-आराम में थी. दोनों बहनों से या

(शेष पृष्ठ ७२ पर)



श्यामकर्ण घोड़ा

तिब्बत के पड़ोसी देश नेपाल में एक बड़ा व्यापारी रहता था. उसका नाम सार्थवाहु था. उसने सोचा कि ल्हासा जाकर धन कमाना चाहिए. वह इस बात से अनजान था कि ल्हासा में यक्षिणियां रहती हैं. वह अपने पांच सौ साथियों के साथ बहुत-सा माल लेकर ल्हासा की ओर चल पड़ा.

रास्ता बहुत बीहड़ था. ऊंची-ऊंची पहाड़ियों और खतरनाक जंगलों को पार करके कुछ दिन बाद सार्थवाहु अपने दल सहित ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे जा पहुंचा. तभी ल्हासा में यक्षिणियों को उनके आने का समाचार मिला. खबर पाते ही यक्षिणियों ने सुंदर स्त्रियों का रूप धरा और नदी किनारे पहुंच गयीं. वहां वे चमड़े की नाव चलाने वाली नाविकाएं बन गयीं.

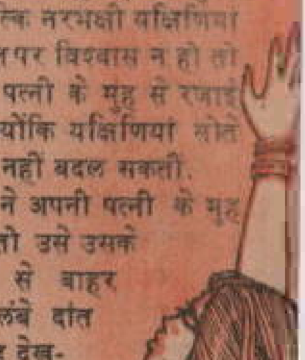
जब सार्थवाहु के व्यापारी दल ने नदी के किनारे नाव के साथ सुंदर नाविकाओं को देखा, तो वे बहुत प्रसन्न हुए. यक्षिणियों ने उन्हें अपनी नाव में बैठाकर नदी पार करायी और अपने नगर ले आयीं.

संयोग से जितनी यक्षिणियां थीं, संख्या में उतने ही सार्थवाहु के साथी थे. कुछ ही दिनों में यक्षिणियों ने उनका मन जीत लिया. प्रत्येक यक्षिणी ने एक-एक व्यापारी से विवाह कर लिया.

कठिन रास्ते से लंबी यात्रा करके आये व्यापारी कमजोर हो गये थे. यक्षिणियों ने सोचा कि इन्हें कुछ दिन स्वादिष्ट भोजन खिलाकर तगड़ा कर लिया जाये. फिर इन्हें खाया जाये.

एक दिन आधी रात को व्यापारी दल गहरी नींद सो रहा था. सार्थवाहु को किसी कारण नींद नहीं आ रही थी. तभी उसे खनकती हुई हंसी सुनायी दी. उसने घूमकर देखा तो दीपक की लौ हंस रही थी. वह दीपक के पास पहुंचा, तो उसके देवता ने उसे दर्शन दिये और कहा कि ऐ मूर्ख व्यापारी, तु क्यों इन दुष्ट यक्षिणियों के फंदे में फंस रहा है. ये सुंदर स्त्रियां नहीं हैं, बल्कि नरभक्षी यक्षिणियां हैं. अगर मेरी बात पर विश्वास न हो तो अपनी सोयी हुई पत्नी के मुंह से रजाई हटाकर देख ले, क्योंकि यक्षिणियां सोते समय अपना भेष नहीं बदल सकतीं.

जब सार्थवाहु ने अपनी पत्नी के मुंह से रजाई हटाई, तो उसे उसके भयानक मुख से बाहर निकले हुए दो लंबे दांत नजर आये. यह देखकर उसके होश उड़ गये. डर के मारे रंग पीला पड़ गया.



हे दयालु देवता! —सार्थवाहु ने दंडवत होकर कहा—जैसे भी हो इन यक्षिणियों से छुटकारा दिलाओ. मैं जन्म भर तुम्हारा अहसान नहीं भूलूंगा.

इसपर देवता ने कहा कि तो सुन, जैसा मैं कहूं वैसा कर. कल सुबह इन यक्षिणियों से कहना कि शहर में रहते-रहते हम ऊब गये हैं. तुम हमारे लिए भोजन बना दो. आज हम लोग नहाने और घूमने के लिए ब्रह्मपुत्र जायेंगे.

थोड़ी देर रुककर देवता फिर बोला—जब तुम नदी के किनारे पहुंचोगे, तो तुम्हें एक मोटा-सा लकड़ी का खंभा मिलेगा. उसके तीन चक्कर लगाकर प्रार्थना करना कि हे देवता, हमें यक्षिणियों के जाल से मुक्त कराओ. फिर आगे जैसा वह देवता कहे, वैसा करना.

इतना कहकर दीपक की लौ में वह देवता गायब हो गया.

सुबह होने पर सार्थवाहु ने अपने साथियों को एकांत में बुलाया. उन्हें देवता के साथ हुई बातें बतायीं. सभी के चेहरों पर डर छा गया और सबने यक्षिणियों से बचने की इच्छा प्रकट की.

देवता के बताये उपाय को मानकर सभी व्यापारी अपने सरदार सार्थवाहु के साथ नहाने के बहाने ब्रह्मपुत्र के किनारे पहुंच गये. वहां खंभे के रूप में खड़े देवता के तीन चक्कर लगाये. फिर दंडवत होकर प्रार्थना की कि हे देवता, हमें इन यक्षिणियों के जाल से मुक्त कर!

प्रार्थना सुनकर खंभा हल्की आवाज के साथ [illegible] गया और उसमें से एक विशालकाय घोड़ा निकला. उस घोड़े के बड़े-बड़े पंख थे. घोड़े ने बाहर आकर कहा—मैं श्यामकर्ण घोड़ा हूं. मैं तुम सबको तुम्हारे घर सुरक्षित पहुंचा दूंगा. तुम सब मेरी पीठ पर सवार हो जाओ. लेकिन एक बात याद रखना. यक्षिणियां तुम्हारे पीछे-पीछे आयेंगी और मधुर आवाज में तुम्हें बुलायेंगी. मीठे-मीठे बोल बोलकर तुम्हें ललचायेंगी. पर तुम उनकी बातों में नहीं आना और न ही पीछे मुड़कर देखना. अगर पीछे मुड़कर देखा, तो तुम गिर जाओगे और यक्षिणियां तुम्हें खा जायेंगी.

सार्थवाहु के सभी साथी घोड़े पर सवार हो गये. घोड़े ने अपने विशाल पंख फैलाकर एक गगनभेदी आवाज के साथ उड़ान भरी. घोड़े की आवाज सुनकर यक्षिणियों. ने आकाश की तरफ देखा. व्यापारियों को श्यामकर्ण घोड़े पर दूर जाते देख वे उनके पीछे दौड़ पड़ीं.

वे श्यामकर्ण घोड़े के पीछे-पीछे मधुर आवाज में गीत गाने लगीं. मीठी-मीठी बातें करके उन्हें ललचाने लगीं. घोड़े पर सबसे पीछे बैठा व्यापारी उनकी बातों में आ गया. जैसे ही उसने पीछे मुड़कर देखा, वह घोड़े की पीठ से नीचे गिर पड़ा. उस की यक्षिणी पत्नी ने उसे मार डाला.

इसी तरह सार्थवाहु के सारे साथी यक्षिणियों की मीठी-मीठी प्रेम भरी बातों में आते गये और एक-एक करके उनका शिकार बनते गये. अंत में सार्थवाहु ही सही-सलामत अपने घर पहुंच पाया. उसने देवता की बात मानते हुए पीछे मुड़कर नहीं देखा था.

आज भी ब्रह्मपुत्र नदी को तिब्बत की तरफ पार करने वाली नावों में लकड़ी का एक घोड़ा बना होता है, जिसे लोग श्यामकर्ण घोड़ा कहते हैं.

125, मीर दर्द लेन, नयी दिल्ली-110002


लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
खाली जगह की संख्या बताओ!
11
12
15
16
?
8
10
7
Cadbury's
MILK CHOCOLATE
GEMS
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो। प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो :
"Fun with Gems"
Dept. A-31
Post Box No. 56,
Thane 400 601,
Maharashtra.
प्रवेश-पत्र पहुँचने की अंतिम तिथि : ३१ मई १९७८
जल्दी करो!
अपना उत्तर, कैडबरिज़ जेम्स के एक खाली प्लास्टिक पैकेट के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को ११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
चॉकलेट से भरे रंगीन कैडबरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-181 HIN

इसबार का  किस्सों भरा

(बीरबल बादशाह अकबर के नौ रत्नों में से एक थे—बड़े ही मजाकपसंद और हाजिर जवाब. अकबर से उनकी खूब नोकझोंक होती. इसी नोक-झोंक के अनेक किस्से आज भी बड़े चाव से कहे-सुने जाते हैं. उन्हीं में से कुछ रोचक किस्से यहां दिये जा रहे हैं.)

बादशाह अकबर घोड़ों के बड़े शौकीन थे. एक बार एक सौदागर कुछ बढ़िया घोड़े लेकर उनके दरबार में हाजिर हुआ. बादशाह को घोड़े पसंद आ गये. उन्होंने उन्हें खरीद लिया. सौदागर को अपना माल बिक जाने पर बड़ी खुशी हुई. बोला—हुजूर, मैं मुल्क-मुल्क घूमा मगर अच्छे घोड़ों का कद्रदान और पारखी आपसे बढ़कर कोई नहीं मिला. इसलिए एक विनती है आपसे, अगर हुक्म हो तो अर्ज करूं.

बादशाह अपनी तारीफ सुनकर बड़े खुश हुए. बोले—ठीक है, तुम्हें जो कहना है, निर्भय होकर कहो.

इस पर सौदागर हाथ जोड़कर बोला कि हुजूरेआला, अगर मुझे एक लाख रुपये पेशगी मिल जाये तो अगली दफा इससे भी अच्छे घोड़े ला सकता हूं.

बादशाह ने उसकी विनती स्वीकार कर ली. सौदागर को एक लाख रुपये शाही खजाने से दे दिये गये और वह खुशी-खुशी अपने मुल्क को चला गया.

इसके बहुत दिनों बाद एक दिन बादशाह ने बीरबल से कहा कि बीरबल, तुम दुनिया के मूर्खों की एक सूची तैयार करो. बीरबल ने जो सूची तैयार की, उसमें बादशाह अकबर का नाम सबसे ऊपर लिखा था. यह देखकर बादशाह चौंके. पूछा—बीरबल, तुमने इस सूची में मेरा नाम क्यों लिखा और वह भी सबसे ऊपर. क्या तुम मुझे दुनिया का सबसे बड़ा मूर्ख समझते हो?

यह सुनकर बीरबल ने जवाब दिया कि हुजूर, गुस्ताखी माफ करें. आपने उस दिन बिना सोचे-समझे उस घोड़ों के सौदागर को एक लाख रुपये दिला दिये और उसका अतापता तक नहीं पूछा. क्या वह अब आपको अपनी सूरत दिखाने आयेगा?

बादशाह ने बीरबल को घूरकर देखा और बोले—और अगर वह घोड़े लेकर आ गया तो?

तो . . .तो क्या, मैं हुजूर का नाम काटकर उसकी जगह उसका नाम लिख दूंगा. बीरबल ने तुरंत जवाब दिया.

बादशाह कटकर रह गये.

●

भरे दरबार में एक दफा बादशाह ने बीरबल से पूछा कि बीरबल, जरा बताओ तो कि बेवकूफ आदमी और गधे में क्या फर्क होता है?

बीरबल अदब से खड़े होकर बोले—हुजूर, बहुत बड़ा फर्क होता है.

बादशाह ने पूछा—वह कैसे?

वह ऐसे कि गधा बेवकूफ होते हुए भी झूठ नहीं बोलता जबकि आदमी

बोलता हूं!—बीरबल ने जवाब दिया.

●

एक बार बादशाह ने बीरबल से पूछा कि बीरबल, तुम मरने के बाद कहां जाना पसंद करोगे—स्वर्ग में या नरक में?

बीरबल हाथ जोड़कर बोले—हुजूर, इसमें पसंद-नापसंद का सवाल नहीं है, जहां हुजूर जायेंगे, मैं भी साथ हो लूंगा!

●

एक दफा बादशाह ने बीरबल से पूछा—किसी नालायक से तुम्हारा पाला पड़ जाये तो बीरबल, तुम क्या करोगे?

इस पर बीरबल ने कहा—हुजूर, आपके इस सवाल का जवाब मैं कल दूंगा.

बादशाह ने मान लिया और अगले दिन जब बीरबल दरबार में हाजिर हुए तो एक गंवार आदमी को सिखा-पढ़ाकर अपने साथ लाये और बादशाह से बोले कि हुजूर, आपके कलवाले सवाल का जवाब मेरा यह भाई देगा.

बादशाह ने उस गंवार से वही सवाल पूछा. लेकिन गंवार चुप रहा. बादशाह ने अपना सवाल फिर दोहराया. मगर वह आदमी फिर भी खामोश रहा. आखिर बादशाह ने झुंझलाकर कहा—बीरबल, यह क्या मजाक है! मैं सवाल पूछता हूं और तुम्हारा यह भाई है कि चुप्पी साधे खड़ा है.

यह सुनकर बीरबल मुस्कराये और बोले—हुजूर, आप समझे नहीं. यह आपके सवाल का जवाब ही तो दे रहा है.

क्या जवाब दे रहा है?—बादशाह झल्लाकर बोले.

यही कि अगर किसी नालायक से पाला पड़ जाये तो कुछ मत करो, बस चुप्पी साध लो!—बीरबल ने कहा.

बादशाह खिलखिलाकर हंस पड़े.

●

एक दिन बादशाह ने बीरबल से पूछा मेरी हथेली पर बाल क्यों नहीं हैं?

बीरबल बोले—हुजूर, वे लोगों को दान और इनाम देते-देते घिस गये.

इसपर बादशाह ने पूछा कि फिर जो लोग किसी को कुछ नहीं देते, उनकी हथेली पर बाल क्यों नहीं होते.

हुजूर, उनके बाल आपसे लेते-लेते घिस गये. —बीरबल ने जवाब दिया.

लेकिन जो न कुछ देते हैं न कुछ लेते हैं, उनकी हथेली पर?

हुजूर, सीधी-सी बात है. उनके बाल इसलिए उड़ जाते हैं कि वे हमेशा इसी अफसोस में हाथ मला करते हैं कि दुनिया में रहकर आखिर क्या किया, न किसी को कुछ दिया, न किसी से कुछ लिया.

●

यह नहीं कि बादशाह ही हमेशा बीरबल के हाथों बेवकूफ बनते हों, कभी-कभी बीरबल को भी बादशाह के हाथों मात खानी पड़ती थी. उसी का एक किस्सा—

एक दिन बादशाह ने भरे दरबार में बीरबल से पूछा—बीरबल, सूरज पूरब से ही क्यों निकलता है और पश्चिम में ही क्यों डूबता है?

यह सुनकर बीरबल खड़े होकर बोले कि हुजूर, यह तो किसी बेवकूफ से भी पूछेंगे तो वह भी बता देगा.

इसी लिए तो तुमसे पूछ रहा हूं बीरबल!—बादशाह ने फौरन कहा.

सारे दरबारी खिलखिलाकर हंस पड़े और बीरबल बेचारे अपना-सा मुंह लेकर रह गये.



मौला या आसफुद्दौला

■ बनमाली

बात उन दिनों की है जब अवध की रियासत में नवाब आसफुद्दौला का शासन था. उनके राज में प्रजा संतुष्ट थी और चारों ओर उनकी योग्यता की तारीफ की जाती थी. परंतु वे कुछ अभिमानी स्वभाव के थे. उनके दरबार मे विद्वानों, साधु-संतों तथा पीरों-फकीरों की भीड़ लगी रहती. नवाब के कर्मचारी सभी का आदर-सत्कार करते और उन्हें दान-दक्षिणा देकर विदा करते.

नवाब के महल पर बख्शू और मेहरू नाम के दो फकीर रोज भिक्षा लेने आते. दोनों का भिक्षा मांगने का तरीका अलग-अलग था. सुबह दिन निकलने पर बख्शू आता और महल के द्वार पर आकर नवाब का गुणगान करते हुए कहता—जिसको न दे मौला, उसको दे आसफुद्दौला. नवाब के कर्मचारी प्रसन्न होकर उसे कभी खाने की चीज और कभी धन देकर विदा करते.

दोपहर को दूसरा फकीर मेहरू आता और अल्लाह की रहमतों की प्रशंसा करता हुआ कहता—जिसे देगा मौला, उसे देगा आसफुद्दौला. वह अल्लाह के नाम पर भिक्षा मांगता. नवाब के चापलूस कर्मचारी उससे चिढ़ कर उसकी झोली में कभी कुछ पैसे फेंक देते और कभी खाली हाथ ही लौटा देते. मेहरू शांत मन से कर्मचारियों के व्यवहार पर विचार किये बिना आगे बढ़ जाता.

संयोग से एक दिन नवाब आसफुद्दौला महल के बाहर वाटिका में सुस्ता रहे थे कि दोनों फकीर एक ही वक्त पर आ पहुंचे. बख्शू ने रोज की तरह नवाब की रहमतों का गुणगान किया और ऊंचे स्वर में—जिसको न दे मौला, उसको दे आसफुद्दौला—कहते हुए भिक्षा मांगी. दूसरी तरफ मेहरू ने अल्लाह की दया का बखान करते हुए कहा—जिसे देगा मौला, उसे देगा आसफुद्दौला, नहीं देगा मौला, तो क्या करेगा आसफुद्दौला. और

अल्लाह के नाम पर भिक्षा के लिए दामन फैलाया.

नवाब ने दोनों की फरियाद सुनी. मेहरू के भिक्षा मांगने के ढंग से उनके अभिमानी स्वभाव को बड़ी ठेस लगी. एक नौकर को बुलाकर उन्होंने हुक्म दिया कि मेहरू को तांबे का सिक्का देकर दफा कर दो. बख्शू के लिए उन्होंने बावर्चीखाने से एक बड़ा-सा सीताफल लाकर देने को कहा. दोनों फकीर अपनी-अपनी राह चल दिये.

कुछ दूर जाकर बख्शू ने सोचा कि रोज-रोज भिक्षा की चीजें खा-खाकर मन ऊब गया है. क्यों न आज इस बेकार सीताफल के बदले कोई बढ़िया तरकारी ले लूं. कुछ मुंह का स्वाद ही बदलेगा. यह सोचकर वह सब्जी वाले के पास गया और वहां से सीताफल के बदले में उसने दूसरी तरकारी ले ली.

उधर रास्ते में मेहरू के मन में विचार आया कि क्यों न आज कुछ पैसे बचाकर कोई सस्ती-सी सब्जी खरीद ली जाये. वह उसी सब्जी वाले के पास गया, जहां बख्शू ने कुछ ही देर पहले अपना सीताफल बेचा था. सीताफल मेहरू को जंच गया और उसने भिक्षा में मिले सिक्के से वही खरीद लिया.

सीताफल लेकर मेहरू अपनी झोंपड़ी की तरफ चल दिया. रास्ते में बख्शू ने उसे अपने वाला सीताफल ले जाते देखा. मन ही मन उसे हंसी आयी और उसने व्यंग्य से कहा—अरे मेहरू, मैं ही तो यह बेस्वाद सीताफल सब्जी वाले को दे आया था. उसे ही तू ले आया. और कुछ नहीं मिला तुझे?

मेहरू ने कोई जवाब न दिया और अपनी झोंपड़ी में आ गया. जैसे ही उसने वह सीताफल काटा, उसमें बहुत-सी अशर्फियां पाकर वह चौंक गया. फिर अल्लाह की रहमतों का गुणगान करते हुए बोल उठा—जिसे देगा मौला, उसे देगा आसफुद्दौला, नहीं देगा मौला तो क्या करेगा आसफुद्दौला. दूसरे दिन से उसने भिक्षा के लिए जाना बंद कर दिया.

रोज की तरह दूसरे दिन बख्शू फिर नवाब के महल पर आ पहुंचा. आसफुद्दौला का गुणगान करते हुए उसने भिक्षा मांगी. नवाब ने उसे बुला कर पूछा कि कल दिये हुए सीताफल का तुमने क्या किया. बख्शू इस अजीब सवाल से चौंक उठा और फिर बोला—महाराज, मैंने उसे सब्जी वाले को बेच दिया था, जहां से उसे दूसरे फकीर मेहरू ने खरीद लिया.

नवाब आसफुद्दौला को सारा किस्सा समझ में आ गया. उन्होंने ही बख्शू को खुश करने के लिए सीताफल में कुछ अशर्फियां रखने का हुक्म दिया था. उन्हें अपनी गलती का अहसास हो गया और उस दिन से उन्होंने अपने मन से अभिमान निकाल दिया.

द्वारा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, निकासन रोड, अंबाला छावनी-133001



अखिल भारतीय कैमल रंग-प्रतियोगिता में भाग लीजिए।



चित्र बनाने में आपकी अनूठी प्रतिमा की कैम्लिन कद्र करती है. भारत में आप कहीं भी रहते हो, किसी भी स्कूल में पढ़ते हों कैम्लिन आपके पास हाथ घड़ियों, अलार्म घड़ियों जैसे अनेक सुंदर पुरस्कारों के साथ पहुंचेगी. हमारी रंग प्रतियोगिता में भाग लीजिए. सर्वोत्तम चित्र बनाइए. संभव है हमारे ७०० पुरस्कारों के विजेताओं में आप भी हों.

प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कोई शुल्क नहीं है. आपको अपने बनाये चित्र के साथ बस एक एंट्री कूपन भेजना होगा. यह कूपन प्रतियोगिता के नियमों के साथ स्टूडेंट्स एंड आर्टिस्ट्स वाटर कलर केक्स, स्टूडेंट्स वाटर कलर ट्यूब्स, पोस्टर कलर ट्रायल पेक्स और ऑयल पेस्टल्स के साथ मिलते हैं.

कैम्लिन प्राइवेट लिमिटेड
आर्ट मटीरियल डिव्हीजन
अंधेरी, बम्बई-४०० ०५९

30,000 रु. मूल्य के ७०० पुरस्कार!



आज ही अपने लिए कैमल कलर खरीदिए.
प्रतियोगिता अवधिः
जून-सितम्बर, १९७८.

VISION

सवाल तुम्हारे जवाब हमारे

● राजेंद्र शर्मा, टोंक (राज.)

अक्ल घास चरने कब जाती है?

जब उससे अच्छी कोई चीज उसके पास चरने को नहीं रह जाती.

● नीलेंद्रा चौहान, जोधपुर (राज.).

अपशब्द तो कहती है जीभ परंतु डंडे सिर को खाने पड़ते हैं. ऐसा पक्षपात क्यों?

एक ही पार्टी के सदस्य होने के नाते.

नाक में दो छेद क्यों होते हैं, जबकि हमारा काम एक से ही चल जाता है?

ताकि एक के बंद हो जाने पर शरीर का काम न रुकने पाये.

● संजयकुमार केसरी, कोआथ (बिहार).

मुंह को मीठा करने के लिए मिठाई की आवश्यकता होती है. लेकिन आवाज को मीठा करने के लिए किसकी आवश्यकता होती है?

चतुराई की या फिर अच्छे संस्कार की.

● गौतम कु. दास, पीपराडीह (बिहार).

कुछ लोग कुछ देवताओं के सिर पर जल क्यों चढ़ाते हैं?

ताकि देवता नाराज भी हो तो उसका गुस्सा ठंडा होकर पूजा का फल जल्दी दे और अच्छा दे.

● रमेश कुमार, रांची.

यदि कोई आदमी अमीरों को लूटकर गरीबों की सहायता करता है, तो उसे क्या कहना चाहिए—साधु या शैतान, सज्जन या दुर्जन या कुछ और?

जब तक कुछ और उचित शब्द न मिल जाये, तब तक मददगार लुटेरा से काम चलाओ.

● अमितकुमार गुप्ता, बंबई.

अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर यह बताने का कष्ट करें कि किसकी दुलत्ती ज्यादा जोरदार होती है. गधे की या घोड़े की?

आप अपनी दुलत्ती के चक्कर में हमें नहीं फांस सकते.

पुरस्कृत प्रश्न :

● नंदलाल शर्मा, जवाहर पथ, पो. सुजानगढ़, जि. चूरू (राज.).

अंकल जी, अक्ल बाजार में बिकने लगे तो?

अक्लमंदों का भाव गिर जायेगा.

कपट की करतूत

■ राजेश्वर गंगवार

किसी जमाने में रतनपुर नाम के नगर में राजा चंद्रगुप्त राज करते थे. उनके चार बेटे थे. सबसे बड़े बेटे का नाम था मदनसेन और उसकी पत्नी थी चंद्रप्रभा—ठीक चंदा की चांदनी जैसी सुंदर.

अभी मदनसेन की शादी हुए एक साल भी न बीता था कि राजा चंद्रगुप्त ने किसी बात पर नाराज होकर मदनसेन को देश निकाला दे दिया. उसे हुक्म हुआ कि वह सवेरा होते ही राज्य की सीमा से बाहर



चला जाये. देश निकाले का हुक्म सुनकर मदनसेन दरबार से अपने महल में गया और उदास होकर पलंग पर औंधे मुंह पड़ गया. चंद्रप्रभा पति की उदासी देखकर बड़ी व्याकुल हुई. उसने पूछा कि प्राणनाथ, तुम्हारा चेहरा आज मुरझाया हुआ क्यों है? मुझे भी अपने दुःख की बात नहीं बताओगे, तो किसे बताओगे.

मदनसेन बोला कि प्रियतमे, मेरे दुःख को तुम नहीं बंटा सकतीं. कहने से फायदा ही क्या. बस इतना समझ लो कि हमारी-तुम्हारी यह आखिरी मुलाकात है. मुझे देश-निकाले का हुक्म हुआ है.

यह सुनते ही चंद्रप्रभा गश खाकर गिर पड़ी. अब तो मदनसेन बड़ा घबराया. पछताने लगा कि मैंने बेकार ही इससे देश-निकाले की बात कह दी. चुपचाप चला जाता, तो ज्यादा अच्छा था. खैर, उसने चंद्रप्रभा के मुख पर पानी के छींटे दिये. चंद्रप्रभा को होश आया और वह रोकर कहने लगी कि प्राणनाथ, मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगी. मैं आपके बिना इस महल में एक पल जिंदा न रहूंगी. मदनसेन ने समझाया कि क्यों जिद करती हो. मैं परदेस में न जाने कहां-कहां भटकूंगा.



जंगलों, बीहड़ों में मुझे दिन गुजारने होंगे. तुम महलों में पली हो. बनवास के दुख कैसे झेलोगी.

चंद्रप्रभा बोली कि आप भी तो महलों में ही पलकर बड़े हुए हैं. जैसे आप दुःख के दिन बितायेंगे, मैं भी बिता लूंगी. आपके बिना तो यह महल मुझे जंगल से भी ज्यादा भयानक लगेगा. जैसे प्राण निकल जाने पर सुंदर से सुंदर शरीर भी मिट्टी ही होता है, वैसे ही पति के बिना सुंदर महल भी ईंट-पत्थर के ढेर ही तो हैं.

यह सुनकर मदनसेन समझ गया कि यह मेरे बिना नहीं रहेगी. मजबूर होकर उसने साथ चलने की इजाजत दे दी.

अगले दिन पौ फटते ही दोनों पैदल चल पड़े जंगल की ओर. बैसाख का महीना था. थोड़ी ही देर में गर्मी बढ़ने लगी. लेकिन वे दोनों चलते रहे. चलते-चलते दोपहर हो गयी. दोनों थककर चूर हो गये. तभी एक ओर कुछ पेड़ दिखायी दिये. दोनों उधर ही बढ़ गये. एक आम के पेड़ की छाया में सुस्ताने लगे. हारे-थके तो थे ही, छाया में शीतल हवा के झोंकों से नींद आ गयी. इतने में एक सांप कहीं से निकलकर आया और चंद्रप्रभा के पांव में काट खाया. चंद्रप्रभा दर्द से तड़प उठी. मदनसेन की भी आंख खुल गयी. दर्द से छटपटाती पत्नी के पांव से बहते खून और भागते हुए सांप को देखकर वह सारी बात समझ गया. उसने झट से कपड़ा फाड़कर घाव के ऊपर कसकर बांधा, लेकिन उस विषधर का जहर इतनी तेजी से फैल रहा था कि मदनसेन कुछ न कर सका. चंद्रप्रभा ने तड़प-तड़प कर प्राण दे दिये.

मदनसेन बिलखकर रो पड़ा. जिस जीवन संगिनी ने उसके बिना महलों में रहना पसंद नहीं किया, वही अब उसे छोड़कर चली गयी. राज छूटा, महल छूटा, समाज और परिवार छूटा—जो आखिरी सहारा पत्नी थी, उसका भी साथ छूट गया, तो अब जिंदगी में रह ही क्या गया है. इससे तो मर जाना अच्छा. यह सोचकर मदनसेन उठा और आस-पास से लकड़ियां बीनने लगा. रो-रोकर कहता जाता कि अब तो चंद्रप्रभा के साथ ही चिता में जल मरूंगा.

संयोग की बात कि तभी महादेव और पार्वती जी उधर से निकले. यह दृश्य देखकर पार्वती जी को बड़ी दया आयी. वे महादेव जी से बोलीं कि प्रभु, इस युवक का दुःख दूर करो. इसका यह रुदन सुनकर मेरा कलेजा फटा जा रहा है.

महादेव जी बोले कि गौरा, यही मुझे अच्छा नहीं लगता और इसी लिए मैं तुम्हें साथ लेकर नहीं चलना चाहता. तुम जिस किसी को दुखी देखती हो, झट मेरे पीछे पड़ जाती हो कि इसका दुःख दूर करो. दुनिया में सुख-दुख तो लगा ही रहता है. न जाने कितने दुखियारे मिलेंगे पग-पग पर. कैसे सबका दुःख दूर किया जा सकता है.

यह सुनकर पार्वती जी हाथ जोड़कर बोलीं, हे भोलानाथ, अब चाहे जो कहो,

लेकिन जैसे भी हो, इस युवक का दुःख तो दूर करना ही पड़ेगा.

शंकर जी मजबूर हो गये. दोनों मदनसेन के पास पहुंचे और उससे पूछा कि बेटे तुम कौन हो, तुम पर क्या आपदा आ पड़ी है, जो रो-रोकर प्राण दे रहे हो. मदनसेन बोला कि महाराज क्या बताऊं, पिता ने वनवास दे दिया और यहां वन में आपके गले की शोभा इन नागदेवता ने मेरी प्रिया के प्राण ले लिये.

तब शंकर जी ने उसे बहुत समझाया कि जो जन्म लेता है, उसे एक दिन मरना ही होता है. अब यह मानकर दिल को तसल्ली दो कि इसका इतना ही साथ बदा था. लेकिन महादेव जी की बात से मदनसेन को तसल्ली न हुई. बोला, महाराज, मरना तो सभी को होता है, लेकिन यह अकाल मृत्यु बड़ी दुखदायी होती है. तब महादेव जी ने कुछ क्षण विचार किया और बोले कि राजकुमार, इस राजकुमारी की उम्र सिर्फ २० वर्ष थी, सो इसने अपने जीवन के बीस वर्ष पूरे कर लिये. तुम्हारी उम्र ६५ वर्ष है, जिसमें से तुमने २५ वर्ष बिता लिये. अभी तुम्हारी उम्र ४० वर्ष और है. इसे जिलाने की एक तरकीब है. अगर तुम अपनी जिंदगी के २० वर्ष इसे दान में संकल्प कर दो, तो यह जी उठेगी.

यह सुनते ही मदनसेन का चेहरा खिल उठा. वह झट से तैयार हो गया. महादेव जी ने अपने कमंडल से थोड़ा जल उसकी हथेली में डाला और कहा कि संकल्प करने से पहले एक बात और सुन लो. जिस दिन यह राजकुमारी इसी तरह संकल्प करके यह कह देगी कि मैं राजकुमार मदनसेन द्वारा दी गयी चीज को अब लौटा रही हूं, उसी समय यह मर जायेगी. लेकिन यह बात तू इसे बताना मत. कभी तेरे काम आयेगी. यह कहकर महादेव जी पार्वती जी को लेकर चल दिये. मदनसेन ने महादेव जी की बात गांठ बांध ली. उसने यह कहते हुए कि मैं अपनी बची हुई जिंदगी में से आधी चंद्रप्रभा को संकल्प करता हूं, अंजुरी का पानी चंद्रप्रभा की हथेली पर डाल दिया. चंद्रप्रभा तुरंत 'राम राम' कहके जी उठी.

दोनों फिर चल दिये. कई दिन तक ऐसे ही भटकते रहे. एक दिन उन्हें एक कुटी दिखायी दी. सोचा, चलो वहां थोड़ी देर विश्राम करेंगे. दोनों कुटी पर पहुंचे. वहां एक खूबसूरत नौजवान साईं सुंदर फूलों की माला पहने तकिया लगाये हुक्का पी रहा था. मदनसेन और चंद्रप्रभा साईं के पास जाकर बैठ गये. चंद्रप्रभा ने उस साईं को एकटक देखा और फिर नजरें नीची कर लीं. इतने में मदनसेन बोला कि मुझे बड़ी प्यास लगी है. साईं ने बताया कि कुटी के पीछे कोई ५० गज दूर एक कुआं है, वहीं लोटा-डोर भी रखा है. चंद्रप्रभा बोली कि तुम पानी पी आओ, मुझे तो प्यास नहीं है. मैं यहीं सुस्ताती हूं.

मदनसेन कुएं की ओर गया. इधर चंद्रप्रभा ने मन में सोचा कि वनवासी राजकुमार के साथ पता नहीं कहां-कहां ठोकरें खानी पड़ें. इससे तो अच्छा है कि यहां इस साईं के साथ रहूं. कम से कम सिर पर एक छत तो है. यह बात मन में आते ही चंद्रप्रभा सोच में पड़ गयी. इतने में मदनसेन भी लौट आया. चंद्रप्रभा उससे बोली, पता नहीं फिर कितनी देर में पानी मिले. चलो, मैं भी पी लूं.

कुएं पर पहुंचकर मदनसेन जैसे ही लोटा भरने के लिए झुका कि चंद्रप्रभा के मन का कपट जोर मार गया. उसने मदनसेन के पैर पीछे से पकड़कर एक जोर का धक्का दिया. मदनसेन कुएं में गिर गया. चंद्रप्रभा हंसती हुई साईं के पास आ गयी और वे दोनों वहां से नौ दो ग्यारह हो गये.

एक शहर में पहुंचकर साईं ने चंद्रप्रभा को एक सुंदर मकान में रखा. वह कुछ करता-धरता तो था नहीं. सो उसने चंद्रप्रभा को नाचना-गाना सीखने के लिए कहा. कुछ ही दिन में वह शहर की सबसे अच्छी नर्तकी बन गयी.

उधर मदनसेन जब कुएं में गिरा, तो इत्तफाक से कुएं की जंजीर उसके हाथ में आ गयी. वह जंजीर पकड़कर लटक गया. संयोग से थोड़ी ही देर बाद बनजारों का एक दल उस कुएं के पास आकर रुका. एक बनजारे ने पानी भरने के लिए बाल्टी कुएं में डाली. मदनसेन ने बाल्टी पकड़ ली. बनजारा बोला, कौन है कुएं में? मदनसेन ने कहा कि भाई, मैं मुसीबत का मारा हूं. मुझे बाहर निकालो. बनजारों ने मदनसेन को कुएं से निकाला.

बाहर आकर मदनसेन ने बनजारों के सरदार को अपनी आपबीती सुनायी. सरदार बोला कि राजकुमार, भगवान सबकी सुनता है. तुम कोई फिक्र मत करो. आराम से हमारे साथ रहो. मदनसेन उस बनजारा दल में शामिल हो गया. वह पढ़ा-लिखा तो था ही, बनजारों का हिसाब किताब देखने लगा. उसकी ईमानदारी देखकर बनजारों का सरदार उसे अपने एक साहूकार दोस्त के पास ले गया. साहूकार ने मदनसेन को अपना मुनीम रख लिया. चंद्रप्रभा भी उसी शहर में थी.

कुछ दिन बाद उस शहर के राजा के यहां चंद्रप्रभा के नाच का इंतजाम हुआ. राजा ने शहर के धनी-मानी लोगों को बुलावा भेजा. साहूकार को भी बुलाया गया. साहूकार अपने साथ मदनसेन को भी ले गया.

महफिल जमी. चंद्रप्रभा ने अपने नाच-गाने से सबका मन मोह लिया. लोगों ने उसे भारी इनाम दिया. मदनसेन ने अपनी अंगूठी उतारकर चंद्रप्रभा को नजर कर दी. अंगूठी देखते ही चंद्रप्रभा पहचान गयी कि यह अंगूठी तो मदनसेन की है. यह तो बड़ा गजब हुआ, जो यह जीवित है और यहां आ पहुंचा है. अब क्या करे, कैसे बचे? कुछ सोचकर उसने राग बसंत में एक गीत गाया. इतना अच्छा गीत था वह कि राजा खुश हो उठा और बोला कि जो इनाम चाहो, मांग लो.

चंद्रप्रभा खुश होकर बोली कि महा-

(शेष पृष्ठ ६१ पर)

गधे का सिर

एक मूर्ख ने किसी बाग में एक लाठी पर टंगा हुआ गधे का सिर देखा.

"वह वहां क्या कर रहा है?" उसने किसी से पूछा.

"उसे वहां इसलिए टांगा गया है, ताकि किसी की बुरी नजर न लगे."

"तुम लोगों के गधों जैसे दिमाग हैं, इसीलिए वहां गधे का सिर टांगा है," मूर्ख ने कहा. "जब वह जिंदा था, तो अपने मालिक के डंडों की मार से खुद को तो बचा नहीं पाया था. भला अब मरने पर किसी को बुरी नजर से कैसे बचा पायेगा?"

□ इदरीस शाह


छोटू और लंबू
चाचा छोटू-लंबू, कोई अच्छा-सा किस्सा सुनाओ!
सुनो, अलीफ लैला का यह किस्सा है—अबुल हसन बड़ा चालाक और भला आदमी था वह जब भी खाने बैठता, दो-चार-दस आदमियों को जरूर साथ खिलाया करता...
लेकिन, चाचा, उसके पास इतने पैसे आते कहां से थे?
अलादीन का चिराग ऐसे सच्चे लोगों को खुद-ब-खुद मिल जाता है और चिराग का जिन उन्हें सब कुछ देता है!
आज भी ऐसा हो सकता है क्या?
क्यों नहीं!
अरे, तुम लोग मेरे बारे में बड़ी अच्छी कथा सुना रहे हो...


...और पीछे तुम्हारे हाथ में गर्मा-गर्म समोसे भी हैं!
लाओ, भाई खिलाओ! वाह वाह—ओ बेटा, तुम भी खाओ—और बेंदू-मेंदू तुम भी तो खाओ!
यह लीजिए, हजूर!
वाह!
यार, बेंदू-मेंदू तुम्हारी उदारता देख कर मुझे यकीन है कि जल्द ही तुम्हें अलादीन का चिराग मिल जायेगा!
अरे, अरे! पैसे दिये बिना तुम लोग बस के लिए लपक रहे हो!
समोसों के पैसे आप दे दीजिए, चिराग मिलते ही हम पैसे दे देंगे!!!


आपके परिवार का
मनपसंद
एम्प्रो
ग्लुकोस बिस्कुट
ampro
GLUCOSE
BISCUITS
स्वाद और
शक्ती का बेमिसाल
मिलन

भाग्य का अर्थ

◇ सुरेश सिंह

बात बहुत पुरानी है. एक गरीब ब्राह्मण था. उसके यहां खाने-पीने की हमेशा तंगी रहती थी. भाग्य पर उसे बड़ा भरोसा था. वह सोचता था कि जितना मेरे भाग्य में लिखा है, उतना तो मिलेगा ही. इसलिए वह कुछ करता-धरता नहीं था.

उसका एक बेटा था उपमन्यु. उसे पिता की गरीबी देखकर बहुत दुःख होता. एक दिन उसने अपनी मां से पूछा कि मां, हम इतने गरीब क्यों हैं?

मां बोली—बेटा, यह कर्मों का फल है. हमारे भाग्य में गरीबी ही लिखी है. सबके भाग्य बदलते रहते हैं. कभी हमारे भाग्य भी बदलेंगे.

मगर यह भाग्यवाली बात उपमन्यु की समझ में नहीं आयी. वह मां से बोला कि मां, भाग्य क्या होता है?

सीधी-सादी मां को क्या पता था भाग्य के बारे में. वह बोली, बेटा मैं क्या जानूं भाग्य क्या होता है. यह तो ऋषि-मुनियों की बातें हैं. भगवान जिसको देता है, छप्पर फाड़ के देता है और जिसे नहीं देता, उसे कंगाल बना देता है.

लेकिन उपमन्यु झुंझलाकर बोला, मां यह सब मेरी समझ में नहीं आ रहा है.

मां को भी झुंझलाहट आ गयी. वह बोली कि नहीं समझ में आता है, तो जाकर पुजारी जी से माथपच्ची कर!



उपमन्यु पुजारी के पास गया. सत्तर साल की अवस्था में भी वह काफी हृष्ट-पुष्ट थे. पुजारी के पास बैठकर उपमन्यु ने पूछा कि महात्मा जी, हमारे पिता बहुत गरीब हैं. मुझे खाने को नहीं मिलता. मां कहती है, यह सब मेरे भाग्य का फल है. मगर भाग्य क्या होता है, यह मां नहीं बतलाती. अब आप ही बता दो कि भाग्य क्या होता है और मेरे भाग्य में गरीब होना क्यों लिखा है?

पुजारी जी बड़े ध्यान से उपमन्यु की बातें सुनते रहे. पुजारी जी अनुभवी महात्मा थे. वे उपमन्यु के पिता को भी जानते थे. इसलिए चाहते थे कि सवाल का जवाब उपमन्यु के साथ-साथ उसके पिता को भी मिले. कुछ देर सोचकर पुजारी ने कहा, उपमन्यु बेटा, आज तुम घर जाओ. कल अपने पिता के साथ आना, तब तुम्हारे सवाल का जवाब देंगे.

उपमन्यु घर लौट आया. वह सोचने लगा कि पुजारी ने पिता जी को क्यों बुलाया है? जरूर कोई बात होगी. मां कहती है पुजारी जी बड़े ज्ञानी हैं. यही सोचता-सोचता वह घर पहुंच गया कि

इतने छोटे-से प्रश्न का उत्तर पुजारी जी ने अभी क्यों नहीं दिया.

और, दूसरे दिन उपमन्यु अपने पिता के साथ पुजारी के पास जा पहुंचा. पुजारी जी ने बड़े ध्यान से दोनों को देखा और उपमन्यु के पिता से बोले, पंडित जी, आप का बेटा बड़ा भाग्यशाली है. लेकिन बीच में एक खराब ग्रह है. घबड़ाने की बात नहीं उसका भी एक उपाय है. यदि तुमने वह पूरा कर दिया, तो ग्रह का असर अपने आप समाप्त हो जायेगा.

उपमन्यु के पिता ने कहा, पुजारी जी, बताइए क्या करना है. मैं जरूर करूंगा.

इस पर पुजारी जी ने कहा, पंडित जी, इस मंदिर में प्रतिदिन अनेक भक्त आते हैं. यहां ठहरते हैं. किसी प्रकार की कठिनाई नहीं है. बस एक बात की कमी है. यहां पानी का कोई प्रबंध नहीं है. मैं यहीं मंदिर के पास जगह बताये देता हूं. वहीं तुम दोनों एक कुआं खोदो. इससे ग्रह का असर भी समाप्त हो जायेगा और लोगों को पानी की सुविधा भी हो जायेगी.

दूसरे दिन से बाप और बेटे ने कुआं खोदना शुरू कर दिया. और कई दिन तक खोदते रहे. कुआं बहुत गहरा खुद गया और पानी का सोता दिखायी देने लगा. तभी एक घड़ा दिखायी दिया.

उपमन्यु के पिता उस घड़े को पुजारी के पास ले गये. पुजारी ने घड़े को खोल कर देखा, उसमें धन के साथ एक कागज का टुकड़ा भी था. कागज का टुकड़ा अपने हाथ में लेकर धन सहित घड़े को उपमन्यु को देते हुए वे बोले, लो यह तुम्हारे भाग्य का है. इसे तुम ले जाओ. तुम्हारे प्रश्न का उत्तर मेरे हाथ में है. और पुजारी ने घड़े से निकला कागज उपमन्यु के पिता को पकड़ा दिया. उसने पढ़ा. लिखा था—भाग्य का दूसरा नाम कर्म है.

उपमन्यु ने कहा कि पुजारी जी इस का क्या अर्थ है. पुजारी जी बोले, इसका अर्थ यह है कि कर्म ही भाग्य है. काम करोगे तो भाग्य अपने आप बन जायेगा. यदि काम ही नहीं करोगे तो भाग्य कहां से आयेगा. तुम दोनों ने कुआं खोदा, तुम्हें धन मिला. यदि तुम कुआं ही नहीं खोदते, तो यह धन कहां से मिलता. इसलिए बेटा, भाग्य कोई चीज नहीं है. कर्म प्रधान है. जाओ, तुम दोनों मिलकर काम करो. तुम्हें खुद ही मालूम हो जायेगा कि भाग्य क्या होता है.

उपमन्यु के पिता ने कहा, पुजारी जी, मैं भी आज पहली बार समझा कि भाग्य क्या होता है. सचमुच, उपमन्यु बहुत भाग्यशाली है जिसने मुझे भी भाग्यवान बना दिया.

कहना न होगा कि कुआं खोदने की पूरी मजदूरी का धन घड़े में बंद कर पुजारी जी ने उसी दिन उनके आने से पहले दबा दिया था.

द्वारा 'दिनमान,' 10 दरियागंज, नयी दिल्ली-2

'क्या करें, अपना भाग्य ही खोटा है, जो पूर्वजों ने शून्य का आविष्कार पहले ही कर डाला, नहीं तो एकाध अंक तो मिलता ही!'



खबरों की दुनिया

□ ज्योत्सना



लेफ्टिनेंट जनरल
ओ. पी. मल्होत्रा

हमारे नये सेनाध्यक्ष

लेफ्टिनेंट जनरल ओ. पी. मल्होत्रा अब हमारे नये सेनाध्यक्ष होंगे. अभी वे सेना के उपाध्यक्ष हैं. वर्तमान सेनाध्यक्ष जनरल टी. एन. रैना 31 मई, 1978 को रिटायर हो रहे हैं. उनकी जगह लेफ्टिनेंट जनरल मल्होत्रा 1 जून, 1978 से कार्यभार संभालेंगे. वे एक लंबे अरसे से सेना से जुड़े हुए हैं. 1977 में उनकी विशिष्ट सेवाओं के लिए उन्हें परम विशिष्ट सेवा पदक दिया गया था.

एक साहसिक छलांग

चौदह दोमंजिली बसें एक कतार में खड़ी हों और कोई नौजवान उन पर से अपनी मोटर साइकिल कुदा ले जाये. क्या ऐसा हो सकता है? तुम कहोगे असंभव. पर इसे संभव कर दिखाया है ब्रिटेन के ऐडी किड ने. १८ वर्षीय किड ने अमरीका के एवेल नाइवेल का १३ बसें छलांगने का पिछला रिकार्ड तोड़ दिया है. १९७६ में किड ने भी १३ बसों पर से छलांग लगाने की कोशिश की थी, पर वह बीच में ही बेहोश होकर गिर गया था. ४५ मीटर से अधिक लंबी उसकी यह छलांग १९,००० दर्शकों ने देखी. इसे दूरदर्शन पर भी दिखाया गया.

घास के ठाठबाट

अगर कोई तुमसे कहे कि तुम्हारी अक्ल घास चरने गयी है, तो बुरा मत मानना. घास अब निरी घास नहीं रही. उसका महत्व बढ़ गया है. क्योंकि खाड़ी के देशों को हरी-भरी घास बेच कर विदेशी मुद्रा कमाने का रास्ता खुल गया है. दुबई के एक शेख की मांग पर एक टन विशेष किस्म की घास भेजी भी जा चुकी है. इस घास की कीमत थी सिर्फ 1500 रुपये और वायुयान से ले जाने का खर्च 1700 रुपये. इसके साथ ही माली भी लॉन लगाने दुबई तक गये.

जेसल-तोरल

□ वर्षा दास

प्राचीन काल की बात है. गुजरात के कच्छ प्रदेश में रायघण नाम का एक राजा राज करता था. उसके सबसे बड़े पुत्र के बेटे का नाम जेसल था. वह बचपन से ही बड़ा निडर, साहसी और शरारती था. बड़ा होकर वह एक मशहूर लुटेरा बन गया. लोग उससे डरने लगे.

एक बार जेसल की भाभी ने उसको ताना मारते हुए कहा कि यहां की बस्ती को तुम इतना सता रहे हो, हिम्मत हो तो सोरठ के सांसतिया काठी के घर जाओ. उनकी पत्नी तोरल चांद का टुकड़ा है. उनकी घोड़ी का नाम भी तोरल है. ऐसी बढ़िया घोड़ी दुनिया में किसी के पास नहीं होगी. और काठी की तलवार भी बरामदे में लटक रही होगी. सच में बहादुर हो तो इन तीनों को ले आओ.

जेसल ने जोश में आकर कहा कि देख लेना भाभी, इन तीनों को न ले आऊं, तो मेरा नाम जेसल नहीं.

और एक रात जेसल सांसतिया काठी के घर जा पहुंचा. घना अंधेरा था. लगता था, जैसे आकाश से अंधकार बरस रहा हो. जेसल लाल लुंगी पहने और काला कंबल ओढ़े मानो अंधेरे में घुलमिल गया था. उसके एक हाथ में तलवार थी और दूसरे हाथ में दीवार में सेंध लगाने का औजार था.

मकान की पिछली दीवार में जेसल ने छेद करना शुरू किया. धीरे-धीरे दीवार टूटने लगी. छेद बड़ा होने लगा. घर के भीतर से भजन की आवाज आने लगी. पर इस सबसे बेखबर जेसल अपने काम में जुटा रहा. जब छेद काफी बड़ा हो गया, तो वह उसमें से होकर भीतर चला गया.

वह घोड़े बांधने की जगह थी. एक फुर्तीली घोड़ी वहां खड़ी थी. उसकी आंखें अंगारों की तरह चमक रही थीं. पराये आदमी की गंध पाकर वह जोर से हिनहिनायी.

सांसतिया संत पुरुष था. दिन-रात भजन और प्रभु-भक्ति में लीन रहता था. इस समय भी कीर्तन चल रहा था. भजन समाप्त हुआ. घोड़ी फिर हिनहिनायी. सांसतिया ने अपने आदमी से कहा—भाई, जाकर पता लगाओ कि यह घोड़ी आज इतनी क्यों हिनहिना रही है? कहीं सांप-बिच्छू तो नहीं निकल आये?

यह सुनकर घोड़ी के खूंटे के पास जो घास बिछी थी, उसके नीचे जेसल छिप गया. उस आदमी ने आकर देखा, तो घोड़ी ने खूंटा ही उखाड़ दिया था. उसने एक पत्थर से वह खूंटा फिर से जमीन में गाड़ दिया और घोड़ी को बांधकर चला गया. इधर यह खूंटा जेसल की हथेली के आरपार निकल गया. उसे बेहद पीड़ा होने लगी. खून की धारा बह निकली. पर जेसल के मुंह से आह तक नहीं निकली. वह चुपचाप पड़ा रहा.

भजन समाप्त होने पर आरती हुई. प्रसाद बांटा गया. सभी को प्रसाद देने के बाद थाल में एक आदमी के हिस्से का प्रसाद बच गया. यह देखकर सांस-तिया ने कहा कि यहां एक आदमी और

होना चाहिए. यह उसी के हिस्से का प्रसाद है. उसे ढूंढ़ो.

ढूंढ़ते-ढूंढ़ते एक आदमी उस घोड़ी के पास पहुंचा गया. वहां देखा तो घास खून से लथपथ थी. घास हटायी तो नीचे जेसल और उसकी हथेली के आर-पार खूंटा. उसने खूंटा खींचकर बाहर निकाला. जेसल खड़ा हो गया. उस आदमी ने आवाज देकर सांसतिया और उसकी पत्नी तोरल को बुलाया.

दोनों वहां आये. जेसल तो तोरल का रूप देखता ही रह गया. तभी सांसतिया ने उससे पूछा—आप कौन हैं.

जेसल बोला—राजपूत.

सांसतिया ने आगे पूछा—आपका नाम? स्थान?

जेसल ने जवाब दिया—स्थान कच्छ, नाम जेसल.

जेसल का नाम सुनकर सारे भक्तजन कांप उठे. पर सांसतिया ने शांत स्वर में फिर पूछा—क्यों आये हो?

जेसल बोला—चोरी करने.

हैरान होकर सांसतिया ने पूछा—किस चीज की?

उसने जवाब दिया—सांसतिया की पत्नी तोरल, उसकी घोड़ी और तलवार.

सांसतिया ने जेसल के हाथ की ओर देखकर पूछा—यह क्या हुआ? जेसल ने बताया कि जब वह घास के नीचे छुपा था, तब लोहे का खूंटा उसकी हथेली के आरपार निकल गया था.

सांसतिया जेसल की हिम्मत और सहन शक्ति पर खुश हो गये. पर उन्हें दुःख हुआ कि इतना शक्तिशाली पुरुष गलत रास्ते पर चला गया है. उसे यदि सही रास्ते पर लाया जाये, तो उसमें उसका कल्याण होगा और दूसरों का भी. वे जानते थे कि उनकी पत्नी तोरल पति-व्रता नारी है, वह त्याग और ममता की देवी है. शायद तोरल जेसल को बदल सके, इस शैतान को मानव बना सके. उन्होंने अपनी पत्नी की ओर देखा



तोरल समझ गयी. उसने आंखों से सहमति दे दी.

सांसतिया बोले कि आज दूज की रात है. अतिथि खाली हाथ नहीं जा सकते. यह लो मेरी घोड़ी और तलवार. फिर तोरल से कहा कि सती तोरल, इनको संभालना और जब तुम दोनों का मन करे, तब भजन गाने चले आना.

जेसल आश्चर्य से देखता रह गया. वह समझ नहीं पाया कि यह सच है या सपना है.

खैर, उसने तोरल को घोड़ी पर बैठने के लिए कहा. तोरल बोली कि बेचारी घोड़ी पर इतना बोझ क्यों डालते हो? आप बैठो. मैं साथ-साथ दौड़ूंगी.

सुबह होते-होते घोड़ी पर सवार जेसल और साथ में दौड़ती हुई तोरल नवानगर की खाड़ी के किनारे पहुंचे. नाव तैयार खड़ी थी. तीनों नाव में बैठ गये. नाव चल पड़ी. जेसल गर्व से फूला नहीं समा रहा था. पर तोरल के शांत और पवित्र चेहरे को देखकर जेसल को अपने आप से घृणा होने लगी.

अचानक समुद्र में भयानक तूफान उठा. नाव डूबने-उतराने लगी. बीच समुद्र में उसे बचाने का कोई उपाय नहीं था. पल भर पहले का साफ आकाश काले बादलों से घिर गया.

जेसल का चेहरा पीला पड़ गया. उसे अपनी मौत का डर लगा. उसने देखा तो तोरल शांत बैठी थी. उसके चेहरे पर भय की रेखा तक नहीं थी. कायर जेसल रो उठा. बोला—तोरल देवी, मुझे बचाओ.

तोरल हंसकर बोली—बहादुर लुटेरा तूफान से डर रहा है?

जेसल सूखे पत्ते की तरह कांप रहा था.

कीमत का फैसला

हबीबुल्ला नामक एक सरदार एक बार तुर्की के राजा कादिर हुसन के पास अपने घोड़े को बेचने के लिए गया. राजा कादिर ने पूछा—इसकी क्या कीमत है? सरदार ने जवाब दिया—सिर्फ दो हजार रुपये श्रीमान. राजा ने कहा—मित्र, इसकी कीमत पांच सौ रुपये से अधिक नहीं है. परंतु उस सरदार ने पांच सौ रुपये में घोड़ा नहीं दिया.

राजा को घोड़ा अच्छा लगा था इसलिए उसने दो हजार रुपये देकर घोड़ा खरीद लिया और साथ ही यह भी कहा कि दोस्त, तुम मुझे ठग रहे हो. सरदार कुछ नहीं बोला और चुपचाप रुपये अपनी जेब में रख लिये. इसके बाद वह पलटकर गजब की तेजी से उसी घोड़े पर चढ़ा और तीर की तरह राजमहल से निकल गया.

राजा कादिर ने अपने बीस घुड़सवारों को सरदार हबीबुल्ला को पकड़ने के लिए भेजा. दिन भर पीछा करने के बाद भी वह सरदार पकड़ा न जा सका.

दूसरे दिन वही सरदार राजा कादिर हुसन के दरबार में हाजिर हुआ. उसने दो हजार रुपये राजा के सामने रख दिये और कहा—आपको रुपये या घोड़े में से जो अच्छा लगे, उसे ले लें. राजा कादिर बोला—घोड़ा ही लूंगा.

□ प्रमोदकुमार सिंह

वह तोरल के पैरों को पकड़कर गिड़गिड़ाया—मुझे बचा लो तोरल देवी.

तोरल बोली कि धर्म को याद करो. अपने पापों को याद करो. मैं तुम्हारी नाव को डूबने नहीं दूंगी. जल्दी करो. देखो जैसे तुम्हें अपना जीवन प्रिय है, वैसे ही दूसरों को भी अपनी जिंदगी प्यारी होती है. तुमने कितनी जानें ली हैं? कितने पाप किये हैं? ईश्वर से माफी मांग लो.

जेसल बिलख कर बोला कि मैंने पाप ही पाप किये हैं. कितने पाप गिनाऊं? मैंने लोगों के मुंह से पानी तक छीन लिया है. बारातें लूटी हैं. घोड़ी पर सवार दूल्हों को तलवार के एक झटके से मार डाला है. सिर पर जितने बाल होते हैं, उससे भी अधिक पाप मैंने किये हैं. मुझे माफ कर दो, ईश्वर, मुझे बचा लो. तोरल देवी, मुझे बचा लो.

धीरे-धीरे तूफान थम गया. आकाश स्वच्छ हो गया. नाव स्थिर हो गयी. मानो समुद्र देवता ने जेसल का प्रायश्चित मान लिया हो. जेसल मौत की भयानकता को पहचान गया. जीवन की मधुरता को जान गया. तोरल देवी ने उस शैतान को इंसान बना दिया. एक अच्छा इंसान.

जेसल-तोरल का नाम आज भी गुजरात के कोने-कोने में गूंज रहा है.

(गुजरात की लोककथा पर आधारित)

नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, ए-5, ग्रीन पार्क नयी दिल्ली-110016



सफरनामा सिंदबाद जहाजी का

▫ कन्हैयालाल नंदन

अरसा काफी लंबा गुजर चुका था. सिंदबाद के मन में यह लहर बार-बार दौड़ रही थी कि वह अपनी तिजारत को हिंदुस्तान तक फैला दे. उसने एक दिन तय कर ही लिया कि वह हिंदुस्तान जायेगा. उसने अपनी गठरियों में तिजारती सामान बांधा और बसरा के लिए रवाना होने ही वाला था कि उसके पास एक आदमी दौड़ता हुआ आया. वह आदमी और कोई नहीं, वही हिंदबाद था जो बगदाद की सड़कों पर टहलते हुए सिंदबाद के महल के नीचे आकर बैठ गया था. उसने बाइज्जत सिंदबाद को मशविरा दिया कि अब उसे समुद्री जहाज से जाने की जरूरत नहीं है. अब तो आपको हवाई जहाज से सफर करना चाहिए, वरना हिंदुस्तान के लोग आपको निहायत पिछड़ा हुआ मानेंगे.

सिंदबाद ने मशविरे के लिए हिंदबाद का शुक्रिया अदा किया और अपना साफा संभालते हुए सोच में पड़ गया कि हवाई सफर पता नहीं कैसा हो. लेकिन तभी सिंदबाद को अपना पहला सफर याद आ गया. जब उसके जहाज के कप्तान ने एक बहुत बड़े कछुए की पीठ को एक टापू समझकर उसे उस टापू पर उतार दिया था और फिर बमुश्किल तमाम लहरों से लड़ता वह एक नामालूम किस्म के टापू से जा टकराया था. इस बार सारी मुसीबतों से बचने के लिए सिंदबाद ने इंटरनेशनल एयरलाइंस के दरवाजे खटखटाये.

वहां एयरलाइंस की अरबी महिला बुकिंग अफसर ने सिंदबाद की पगड़ी की तरफ एक निगाह डाली और अपनी एयर-कंडीशन मुस्कान के साथ सिंदबाद से तशरीफ रखने को कहकर अंदर चली गयी. सिंदबाद को छोकरी की मुस्कान पसंद आयी, लेकिन उसका इस तरह अंदर चले जाना सिंदबाद को अच्छा नहीं लगा.

छोकरी लौटी और सिंदबाद से उसके पासपोर्ट की मांग करने लगी. सिंदबाद समझ ही न पाया कि यह क्या बला है. उसने एक नहीं सात सफर किये थे, लेकिन कभी उससे पासपोर्ट नहीं मांगा गया. बोला—मेरा नाम सिंदबाद जहाजी है. मैं कई बार सफर कर चुका हूं. किसी ने पासपोर्ट नहीं मांगा. यह क्या बला है?

छोकरी ने ग्लूकोज डली हुई मुस्कान से सिंदबाद को समझाया कि पासपोर्ट और हैल्थ परमिट के बिना अब सफर करना मुश्किल होगा. हारकर उसे यह

इंतजार करना पड़ा. बहरहाल, सिंदबाद को एक दिन एक हवाई जहाज बंबई एयरपोर्ट पर ले ही आया. उतरकर सिंदबाद एयर टर्मिनल पर अपने सामान का इंतजार करने लगा. सामान एक ट्रैक्टर पर लदा हुआ आया और सरकते हुए रबर के फट्टे पर पटक दिया गया.

गठरियां कई थीं. एक में पुराने सोने के सिक्के बंधे थे. पोर्टर ने ज्यों ही झटके के साथ गठरी को फट्टे की तरफ फेंका, सोने के सिक्के छर्रे से बिखरकर फर्श पर घूमने लगे. तभी सफेद वर्दी पहने कस्टम अफसरों का काफिला पता नहीं कहां से आनन-फानन नमूदार हुआ और सिंदबाद को सिक्के बटोरते देख कर घेर लिया. सिंदबाद ने घबरायी हुई आवाज में ऐलान किया कि उसका नाम सिंदबाद जहाजी है. इस बार उसने समुद्री सफर न करके हवाई यात्रा की है, यही गलती की है.

एक कस्टम अधिकारी आगे आकर बोले—शुक्रिया! लेकिन आपको सोना स्मगल करने के गुनाह में हमारे साथ पुलिस स्टेशन तक चलना होगा.

'गुनाह' शब्द सुना तो सिंदबाद के होश फाख्ता हो गये—मैंने कोई गुनाह नहीं किया. यह तो मेरी अपनी पूंजी है. मैं तिजारती आदमी हूं. तिजारत के लिए अपने साथ अपनी रकम लेकर आया हूं. सिंदबाद साहब बड़बड़ाते रहे और उन्हें पुलिस की हिफाजत में तहकीकात के लिए चलता कर दिया गया. काफी जिल्लत-तबालत के बाद जनाब सिंदबाद जहाजी साहब अपने सामान की गठरियों के साथ कस्टम से बाहर आ पाये. एक कुली ने उनका सामान टैक्सी में रखा और बोला —साहब, बख्शीश!

सिंदबाद को हैरत हुई कि हिंदुस्तान का आदमी भिखमंगा कैसे हो गया! यह तो 'सोने की चिड़िया' कहा जाने वाला देश है. सिंदबाद ने कस्टम से बचे हुए अपने सिक्कों में से एक सिक्का कुली की तरफ बढ़ा दिया.

सिंदबाद की टैक्सी बांद्रा हाई वे से होती हुई नरीमन पाइंट की तरफ लपकती चली जा रही थी. बड़ा भीड़-भड़क्का, हंगामाई आलम था. सिंदबाद सकते में. या इलाही ये माजरा क्या है. जगह-जगह झंडियां, पोस्टर . . . टैक्सी वाले ने बताया कि आज हमारे देश में पालिया-मेंट का चुनाव हो रहा है.

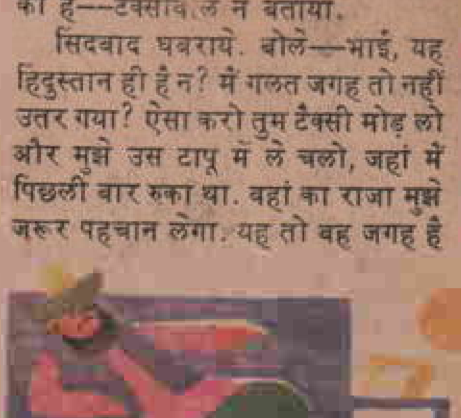
पालियामेंट क्या बला है भाई मेरे? —सिंदबाद ने पूछा.

हमारे देश की हुकूमत चलाने के लिए जो लोग चुने जाते हैं, उनकी सभा का नाम है यह—टैक्सीवाला गर्व से बोला.

तो अब तुम्हारे यहां हुकूमत राजा नहीं चलाते?—हैरत से सिंदबाद बोला.

राजे-महाराजों के दिन लद गये. अब तो वे भी आम आदमी की तरह चुनाव में खड़े होते हैं. देख रहे हो यह लंबी कतार उस स्कूल के बाहर! यह वोट डालने वालों की है—टैक्सीवाले ने बताया.

सिंदबाद घबराये. बोले—भाई, यह हिंदुस्तान ही है न? मैं गलत जगह तो नहीं उतर गया? ऐसा करो तुम टैक्सी मोड़ लो और मुझे उस टापू में ले चलो, जहां मैं पिछली बार रुका था. वहां का राजा मुझे जरूर पहचान लेगा. यह तो वह जगह है



ही नहीं, जहां मैंने अजदहों के बीच मांस के लोथड़ों से चिपटकर लाल-औ-गौहर, हीरे-जवाहरात बटोरे थे. भई, यहां से चलो.

टैक्सीवाला भौंचक्का होकर सोचने लगा कि यह कौन-सी बला सिर पड़ी. कहां ढूंढ़ूं इसका वह टापू? बहरहाल उसने गाड़ी मोड़ दी और सबसे नजदीक उसे जो टापू समझ में आया, उसकी ओर चल पड़ा.

पता नहीं, कहां का जिक्र चला और सिंदबाद ने समुद्री जहाजों का जिक्र छेड़ दिया. उसका इशारा था कि टैक्सीवाला समुद्री सफर की बात चलाये तो बताये कि उसका नाम क्या है और उसने सात बार सफर करके कितना नाम और पैसा कमाया है.

टैक्सीवाला एक ही छंटा हुआ आदमी था. उसने जहाजों के नाम पर मझगांव डॉक का जिक्र छेड़ दिया और उसे बताया कि अब हमारे यहां समुद्री जहाज खुद बनाये जाते हैं. लड़ाई वाले जहाज भी और मुसाफिरी जहाज भी. पूरे के पूरे जहाज एयर कंडीशन हैं. उस टैक्सीवाले की बातें सुनकर सिंदबाद को अपने पुराने सफर वाला जहाज पिद्दी सरीखा लगने लगा. उसका सिर घूम गया. कैसे टैक्सीवाले से पाला पड़ा. खैर, टैक्सी मार्वे बीच के पास मड द्वीप के सामने जा खड़ी हुई. यह रहा आपका टापू—टैक्सीवाला बोला. यहां के राजा को बुलवाओ तो मैं जान लूंगा कि असली जगह आ गया हूं—सिंदबाद ने कहा. टैक्सीवाला झुंझला गया. आपका दिमाग खराब हो गया है क्या? यह मड द्वीप है. यहां राजा-वाजा नहीं है कोई. हमारी अपनी हुकूमत है!

'पिता जी, मैं अब बिजली का काम सीख गया हूं. जल्दी ही आपका नाम रोशन कर दूंगा.'



सिंदबाद को लगा कि अब वह भटक रहा है. इसलिए टैक्सीवाले से नर्मी से बोला—भाई, मुझे प्यास लगी है. किसी चश्मे के पास ले चलो.

टैक्सीवाला सीधे उसे लाया और जुहू के एक होटल में पटक गया. उसका सामान उतारा गया और उसे लिफ्ट में चढ़ाकर ऊपर ले जाया जाने लगा. लिफ्ट का दरवाजा बंद होते ही सिंदबाद घबराया. लिफ्ट ऊपर को चल पड़ी. जितनी देर लिफ्ट ऊपर को चली सिंदबाद की सांस रुकी रही. दरवाजा फिर खुला तो जान में जान आयी. बड़ी हिम्मत करके इशारे से बैरे से पूछा. बैरा बोला—लिफ्ट! ऊपर जाने की मशीन. सिंदबाद समझा कि बिल्कुल ऊपर, खुदा के घर जाने की मशीन! कान पकड़ा कि अब कभी उसमें नहीं चढ़ेगा.

शानो-शौकत का तो वह आदी था ही, आलीशान होटल देखकर थोड़ी राहत मिली. उसे अपने कमरे की खिड़की से एक चुनाव केंद्र और दिख गया. उसने बाहर निकल कर किसी नौकर को बुलाने के लिए ताली बजायी. थोड़ी देर

इंतजार भी किया, लेकिन कोई आया ही नहीं. हारकर वापस कमरे में घुस गया. तभी गलती से उसका हाथ एक बटन पर पड़ गया. अचानक कमरे में एक आवाज गूंजने लगी. सिंदबाद की कुछ समझ में नहीं आ रहा था कि यह आवाज कैसे और कहां से आ रही है. उसने दहशत में कमरे में जितने भी बटन दिख रहे थे, उन सबको दबा दिया. किसी के दबाने से बत्ती जली, किसी से पंखा. एक से घंटी भी बजी. एयर कंडीशनर चला. दरवाजा खोलकर बैरा अंदर आया. पूछा—जी साहब, बुलाया आपने?

सिंदबाद पसीने-पसीने हो रहा था. दहशत के मारे चेहरा सूख रहा था. बैरे को देखकर थोड़ी हिम्मत बंधी. बोला—यह आवाज कहां से आ रही है? बैरे ने रेडियो का स्विच ऑफ कर दिया. आवाज बंद हो गयी.

सिंदबाद खिसियाना होकर तौलिये से अपना मुंह पोंछने लगा. मैं अपने वतन जाना चाहता हूं. बैरे ने उसकी बुकिंग करा दी. कुछ देर बाद देखा गया कि सिंदबाद का सामान फिर से टैक्सी में रखा जा रहा है. सिंदबाद एक ही दिन में हिंदुस्तान से पनाह मांग गया. लौटकर एयरपोर्ट जाते हुए टैक्सी वाले ने पूछ लिया—आप कहां के रहने वाले हैं साहब? कैसा लगा हिंदुस्तान आपको?

बस, यह पूछना था कि सिंदबाद फट पड़ा. बोला—हिंदुस्तान की तरक्की से मैं आजिज आकर भाग रहा हूं प्यारे! यहां वही नहीं मिलता, जिसे मैं खोजने निकला था. आखिर क्या खोजने निकले थे आप?—टैक्सीवाले ने पूछा.

खोजने निकला था आदमी. सो यहां

नींद

खट्टे-मीठे सपनों वाली,
कितनी बड़ी पिटारी नींद!

रोज-रोज लोरी सुनवाती,
कितनी प्यारी-प्यारी नींद!

मुझको लगी मिठाई जैसी,
मीठी-मीठी प्यारी नींद!

नयी-नयी दुनिया में घूमो,
सस्ती बड़ी सवारी नींद!

थका-थका मैं परेशान हूं,
कहां गयी तू आ री नींद!

□ नामवर

भी मशीनें बढ़ गयीं, आदमी कम हो गया. हंगामाखेज जिंदगी है. दहशत हो रही है इस सबको देखकर. मैं अजदहों के बीच रह आया, नहीं डरा, लेकिन इन मशीनों की बेजानियत को दूर से ही देखकर घबरा गया हूं—सिंदबाद बोल उठा.

एयरपोर्ट आ गया था. सिंदबाद हड़बड़ी में उतरा और अंदर चला गया. टैक्सीवाला गाड़ी लेकर आगे बढ़ गया. जब पीछे देखा, तो सिंदबाद का सामान उसी की गाड़ी में रह गया था. वह पुलिस स्टेशन जा रहा था कि वह उसे जमा करा दे. अंदर ही अंदर सोच रहा था कि अगर न जमा कराऊं, घोट जाऊं, तो किसी को क्या पता चलेगा. वह इसी ऊहापोह में था और सिंदबाद का जहाज उड़ा जा रहा था.


बिल्लू
प्रा0।
अरे छक्कन, तुम यह किस खूसट को पकड़ लाए हो?
तुम मुझे नहीं जानते ?... मैं अलीबाबा हूं. मेरी दास्तान बच्चे और बूढ़े सदियों से पढ़ते आ रहे हैं.
बाबाजी, हमारे मुहल्ले में एक बहुत शैतान लड़का बिल्लू रहता है. अगर आप उसे छका दें, तो जानें.
मैं ने चालीस चोरों को नाकों चने चबवा दिए, उस छोकरे की क्या बात है. मैं अभी उस के घर का सफाया कर देता हूं.
लेकिन तुम अंदर कैसे जाओगे? वह सांकल लगा कर सोता है.
हा--हा--!! दरवाजे खोलने का मंत्र हमें अभी तक याद है.



खुल जा सिम-सिम!
अहा, हीरे!
ओह! यह क्या गिरा?
टनन!
वह धोबका जाग गया. भागो!
चोर! चोर! पकड़ो!
चलो अच्छा हुआ. चोर भागने से पहले यह गधा यहीं छोड़ गया. इसे कलवा धोबी को बीस रुपये में बेच कर आज हम मैटिनी शो देखने जायेंगे.
लेकिन वे तुम्हारे हीरे?
वे नकली थे.
© PRAN'S FEATURES







Colgate
Colgate



जवाब थानी के

प्रश्न : क्रिकेट के खेल में 'वाइड बाल' किसे कहते हैं?

—अवनकुमार सिंह, धनबाद.

उत्तर : जब कोई गेंदबाज गेंद को विकेट से बहुत परे फेंक देता है और अंपायर यह सोचता है कि वह गेंद बल्लेबाज की पहुंच से बहुत दूर है, तो वह उसे वाइड बाल घोषित कर देता है, जिससे बल्लेबाज को एक अतिरिक्त रन मिल जाता है.

प्रश्न : भारत और पाकिस्तान के बीच अब तक कितनी श्रृंखलाएं और कितने टेस्ट खेले गये और उनके नतीजे क्या रहे?

—मकसूद ए. 'मफकश', भोपाल पटनम (बस्तर); म. साबिक डिंगणकर, रत्नागिरी (महा.)

उत्तर : भारत और पाकिस्तान के बीच अब तक 5–5 टेस्टों की तीन श्रृंखलाएं खेली जा चुकी हैं. उन 15 टेस्ट मैचों में दो भारत ने जीते. एक पाकिस्तान ने और 12 टेस्ट बराबर रहे.

प्रश्न : इस समय लान टेनिस का विश्व चैंपियन कौन है?

—गोपाल सिंहल, फतहनगर (राज.)

उत्तर : यह इस पर निर्भर करता है कि आप लान टेनिस की दुनिया की सबसे बड़ी प्रतियोगिता किसे मानते हैं. यदि आप विबलडन को मानते हैं, तो पिछले वर्ष स्वीडन के जोन बोर्ग ने यह प्रतियोगिता जीती थी. पुरुषों के सिंगल्स फाइनल में उन्होंने अमेरिका के जिमी कोनर्स को हराया था.

प्रश्न : बैडमिंटन का खेल किस देश ने शुरू किया और कब?

—जी. सुरेश, सिकंदराबाद; उत्तमचंद गोहड़ा, बागबाहरा (म.प्र.)

उत्तर : विश्वास किया जाता है कि आधुनिक बैडमिंटन की शुरुआत ब्रिटेन के सेना के अफसरों ने की. इस खेल के साथ भारत का काफी पुराना और गहरा संबंध रहा, क्योंकि पूना में 1870 से ही यह खेल शुरू हो गया था.

प्रश्न : क्रिकेट में 'चाइना मैन' गेंद किसे कहा जाता है?

—पद्मकांत झा, पटना; अबरार नकवी, नामकुम (रांची); मनोजकुमार मालवीय, भिलाई नगर (म.प्र.); शिवेंद्र, दुमका.

उत्तर : गुगली गेंद के बारे में तो आप जानते ही होंगे (देखिए पराग मार्च, 1978, पृष्ठ 51). जब कोई स्पिनर बायें हाथ से गुगली फेंकता है, तो उस गेंद को 'चाइना मैन' गेंद कहा जाता है.

प्रश्न : टेबल टेनिस का आविष्कार कब और कहां हुआ और शुरू-शुरू में इसका नाम क्या था?

—महेशकुमार, तारानगर

उत्तर : इस खेल के जन्म के बारे में लोगों की अलग-अलग धारणाएं हैं, लेकिन इतना निश्चित है कि इसका जन्म इंग्लैंड में हुआ. 1899 में जब जेम्स गिब ने इस खेल को शुरू किया, तो इसका नाम गोसिमा था. 1900 में इसी खेल को पिंगपांग कहा जाने लगा.

योगराज थानी

शेखचिल्ली की करामात

□ मुबारक अली

शेखचिल्ली कोई काम-धाम तो करते नहीं थे. वृद्धा मां जो कुछ कमाती, वही खाते और आराम से गांव में मटरगश्ती करते. मां से भी अधिक काम नहीं होता था. वह दिन-भर बैठी-बैठी चरखे से सूत काता करती और सप्ताह में एक दिन शहर में जाकर बेच आती. जो कुछ मिल जाता, उससे मां-बेटे अपना खर्च चलाया करते.

फिर एक दिन ऐसा भी आया कि बूढ़ी मां को चलना-फिरना भी दूभर हो गया. दिनभर बैठी-बैठी चरखे से सूत काता करती और शेखचिल्ली उसे शहर में बेच आते. रास्ते में एक बहुत पुराना और बड़ा बरगद का पेड़ था. एक दिन सवेरे के समय जब शेखचिल्ली सूत लेकर शहर जा रहे थे, तो उन्हें उस पेड़ के नीचे एक बहुत बड़ा लाल रंग का गिरगिट दिखायी दिया. शेखचिल्ली खड़े होकर उसे ध्यान से देखने लगे. वह भी शेखचिल्ली को देखकर अपना सिर हिलाने लगा. शेखचिल्ली समझे कि वह सूत मांग रहा है. सो शेखचिल्ली ने सब सूत वहीं पेड़ के नीचे फेंक दिया. गिरगिट ने फिर अपना सिर हिलाया. शेखचिल्ली ने समझा कि वह कह रहा है कि पैसे बाद में ले लेना. इसलिए हंसकर बोले—मामा, पैसों की कोई बात नहीं है. सब इकट्ठे मिल जायेंगे.

अब शेखचिल्ली प्रतिदिन घर से सूत लेकर चलते और बरगद के पेड़ के नीचे गिरगिट के पास फेंककर वापस घर लौट आते. इस तरह सात दिन हो गये. आठवें दिन मां ने कहा कि बेटा, सप्ताह पूरा हो गया है. आज अपने बिके सूत के पैसे लेते आना नहीं तो शाम को खाना नहीं बनेगा.



शेखचिल्ली बोले—मां, तू बेफिक्र रह. आज पैसे जरूर लेता आऊंगा. इसके बाद उन्होंने सूत संभाला और चल दिये बरगद के पेड़ की ओर. उन्हें देखते ही गिरगिट ने फिर अपना सिर हिलाया. यह देखकर शेखचिल्ली बोले—मामा, आज सिर हिलाने से काम न चलेगा. आज तो हिसाब चुकता हो जाना चाहिए. नहीं तो शाम को खाना न बनेगा. यह कहकर शेखचिल्ली ज्योंही गिरगिट की तरफ बढ़े, त्योंही वह भागकर अपने बिल में जा छिपा. यह देख-कर उन्हें बड़ा क्रोध आया और दौड़कर घर से एक कुदाल उठा लाये. अब वे लगे गिरगिट के बिल के आसपास खोदने. थोड़ी ही देर में वहां पीतल के सात घड़े निकल आये. शेखचिल्ली ने एक घड़े का ढक्कन उठाकर देखा, वह अशर्फियों से भरा था. यह देखकर उनकी खुशी का ठिकाना न रहा. भागकर अपनी मां को यह समाचार सुनाने घर पहुंचे.

और उसी रात को मां-बेटे सातों घड़ों को चुपचाप घर ले आये. अब मां-बेटे के दिन आराम से कटने लगे.

एक दिन शेखचिल्ली भुने हुए चने खा रहे थे. अचानक उनके दिमाग में आया कि क्यों न भुने हुए चनों की खेती की जाये. बस, उन्होंने गांव के बाहर एक खेत खरीद कर उसमें भुने हुए चने बो दिये. चनों में



एक चना कच्चा रह गया था, इसलिए वह उग आया. अब क्या था? शेखचिल्ली दिन-रात कंधे पर डंडा लिये उस चने के पौधे की रखवाली करते रहते.

एक दिन रात के समय जब शेखचिल्ली अपने पौधे की रखवाली कर रहे थे तो उन्हें चार आदमी खेत में आते हुए दिखायी दिये. यह देखते ही शेखचिल्ली का क्रोध भड़क उठा. गरजकर कहा—खेत में क्यों घुसे चले आ रहे हो? आप लोग हो कौन? इतनी रात गये कहां जा रहे हो?

उनमें से एक आदमी बोला—अरे भई, हम लोग तो चोर हैं और चोरी करने जा रहे हैं. बोलो, चलते हो हमारे साथ?

यह सुनकर शेखचिल्ली ने उत्तर दिया कि चलने को तो हम अभी चलें, लेकिन यहां खेत की रखवाली कौन करेगा?

दूसरा आदमी हंसकर बोला—अरे, तो इसमें आगा-पीछा सोचने की क्या बात है? पौधे को साथ ही ले चलो. इसे उखाड़ कर अपने साफे में खोंस लो.

यह सुनकर शेखचिल्ली चोरों के साथ चल दिये. उन लोगों ने पास के गांव में एक धनवान बनिये के यहां चोरी करने की ठानी. चोर किसी तरह बनिये की दूकान में घुस गये. शेखचिल्ली भी उनके पीछे-पीछे दूकान के अंदर चले गये. चोर अंधेरे में ही सामान बांधने लगे. शेख-चिल्ली ने भी अंधेरे में टटोलते-टटोलते एक बोरे में हाथ डाला. एक नारियल हाथ में आ गया. अब वे इस चिंता में पड़ गये कि उसे फोड़ा कैसे जाये? यह सोचते हुए अचानक उनका हाथ एक गोल, चिकनी और ठंडी चीज पर जा पड़ा. शेखचिल्ली ने उसे पत्थर समझकर जोर से उसपर नारियल दे मारा.

नारियल पटकते ही एक जोर की चीख निकली—बाप रे! मार डाला! यह बनिये की आवाज थी. शेखचिल्ली ने जिस गोल और चिकनी वस्तु को पत्थर समझा था, वह बनिये का सिर था.

घर के सब लोग जाग उठे और शेख-चिल्ली समेत चारों चोर पकड़े गये. सबने मिलकर शेखचिल्ली और चोरों की खूब पिटाई की. इसके बाद उन्हें राजा के सिपाहियों के हवाले कर दिया. सिपाही शेखचिल्ली को पहले से ही जानते थे कि वे कितने अक्लमंद हैं. इसलिए शेखचिल्ली को छोड़ दिया. लेकिन चोरों को छह-छह महीने की सजा दी गयी.

सजा काटने के बाद जब चोर छूटकर आये, तो एक दिन फिर उनकी मुलाकात शेखचिल्ली से हो गयी. शेखचिल्ली खुश होकर बोले—कहो भाई, मजे में तो हो?

यह सुनते ही चोरों के तन-बदन में आग लग गयी. उन्होंने शेखचिल्ली को चारों ओर से घेरकर चपतियाना शुरू कर दिया. शेखचिल्ली अपना सिर सहलाकर बोले—भाइयो, अब की बार तुम माफ कर दो और मुझे भी अपने साथ ले चलो. आइंदा ऐसी गलती न होगी.

खैर, चोरों ने उन्हें साथ ले लिया. अब की बार चोर फिर एक बनिये के घर में घुसे. किस्मत से घर खाली था और बनिया कहीं दूसरे गांव में किसी बारात में गया हुआ था. चोरों ने कीमती सामान इकट्ठा करना शुरू किया. जब वे सामान की गठरी बांधकर चलने लगे, तो अचानक शेखचिल्ली की नजर भुने हुए चनों के एक बोरे पर गयी. फौरन बोले—भाई, चने का यह बोरा भी लेते चलो. मैं भुने हुए चनों की खेती करूंगा.

चोर समझ गये कि शेखचिल्ली से बहस करना बेकार है. यदि कहीं बात बढ़ गयी, तो यहीं पकड़ लिये जायेंगे. इसलिए वे मन ही मन कुड़कुड़ाकर रह गये. एक चोर ने बोरा अपनी पीठ पर लाद लिया.

जब वे गांव के बाहर आये तो दूर से बाजों की आवाज सुनायी दी. चोर समझ गये कि बारात लौट रही है. इसलिए वे

चाह

प्रसिद्ध सूफी जुनैद के एक अनुयायी ने एक बार उन्हें पांच सौ अशर्फियों से भरी थैली भेंट की.

"क्या इनके अलावा तुम्हारे पास और भी अशर्फियां हैं?" जुनैद ने पूछा.

"जी, हैं."

"क्या उनके अलावा और भी चाहते हो?"

"जी."

"तो फिर ये अशर्फियां भी अपने पास ही रखो," जुनैद ने कहा. "तुम्हें इनकी मुझसे ज्यादा जरूरत है. मेरे पास कुछ नहीं है और न ही मुझे किसी चीज की चाह है. तुम्हारे पास इतना कुछ है और तुम्हें अभी भी और बहुत कुछ पाने की चाह है."

□ इदरीस शाह

एक घने पेड़ के नीचे पहुंचे. उन्होंने चने का बोरा झाड़ियों में छिपाया और पेड़ पर चढ़ने लगे. यह देखकर शेखचिल्ली पिनपिनाकर बोले––भाई, मेरा बोरा भी पेड़ पर ले चलो, नहीं तो मैं जोर-जोर से रोने लगूंगा.

यह सुनकर चोर बड़े घबराये. बारात भी नजदीक आती जा रही थी. इसलिए झक मारकर उन्होंने चनों का बोरा किसी तरह ऊपर चढ़ा लिया.

इत्तफाक की बात, बारात भी आकर उसी पेड़ के नीचे रुकी. चोर बोरे को संभालने की बहुत कोशिश कर रहे थे, लेकिन वह डाल पर संभलता ही न था. अंत में वह बारातियों के बीच नीचे आ गिरा. बोरे का गिरना था कि सब लोग चौंककर ऊपर देखने लगे. लोगों को यह समझते देर न लगी कि ये चोर हैं. उन्होंने पेड़ को चारों ओर से घेर लिया. चोरों को नीचे उतारा गया. फिर उनकी अच्छी तरह धुनाई की. बारातियों में से एक ने शेखचिल्ली को पहचान लिया और उसे मारकर वहां से भगा दिया और चोरों को सिपाहियों के हवाले कर दिया. अब की बार चोरों को लंबी सजा हुई.

कुछ दिनों के बाद चोर सजा काटकर आ गये. एक दिन सहसा उनकी मुलाकात फिर शेखचिल्ली से हो गयी. उन्हें देखते ही शेखचिल्ली माफी मांगने लगे. चोर शेखचिल्ली पर बहुत नाराज थे. लेकिन उन्होंने उनसे कहा कुछ भी नहीं, वे चुपचाप शहर के रास्ते जाने लगे. शेखचिल्ली भी उनके पीछे-पीछे हो लिये. चोरों ने शेखचिल्ली को लौटने के लिए बहुत कहा. उन्हें डांटा भी, मगर वे न माने. थोड़ी देर बाद वे शहर के नजदीक जा पहुंचे.

शहर के बाहर ही सबने सलाह की कि आज राजा के महल में चोरी करनी चाहिए. चोर शेखचिल्ली को लिये हुए राजा के महल के पिछवाड़े पहुंचे. वहां पहरा नहीं था. उन्होंने एक दीवाल को धीरे-धीरे खोदना शुरू किया. थोड़ी ही देर बाद वहां एक आदमी के जाने लायक रास्ता बन गया. चोरों ने शेखचिल्ली को वहीं पहरे पर बिठाया और सब लोग महल के अंदर चले गये. जाते समय वे

(शेष पृष्ठ ६१ पर)

फिल्मी कोना

मेरी यादों की बारात में चलो

□ सुनीलदत्त



छाया : गिरीश शुक्ल

मेरे नन्हे साथियो,

मेरी बेटी का नाम है प्रिया. प्रिया अक्सर कहती है, 'पापा जी! बच्चों के लिए आपको एक किताब लिखनी चाहिए. उसमें आप अपने पराक्रमों के सच्चे किस्से लिखें. बच्चे न केवल खुश होंगे, बल्कि वे स्वयं भी आप जैसे पराक्रमी बन जायेंगे.'

लेकिन मैं फिल्मी दुनिया की भाग-दौड़ में फंसा हूं. प्रिया की यह फरमाइश कब पूरी कर सकूंगा, कहना मुश्किल है. वैसे प्रिया की यह बात पूरी तरह सच है. मेरा जीवन विचित्र घटनाओं और पराक्रमों से भरा पड़ा है. उन्हें लिखने के लिए तो भारी-भरकम पोथा भी कम रहेगा.

किंतु बात जब छिड़ ही गयी है, तो तुम्हें कुछेक घटनाएं अवश्य बताऊंगा. आओ, तुम्हें अपनी यादों की बारात में ले चलूं.

सबसे पहले याद आता है अपना वह गांव, जहां घुड़दौड़ की प्रतियोगिताएं होती थीं. बंबई, पूना या दिल्ली में घोड़ों की जो रेस होती है, वैसी रेस नहीं, बल्कि देहाती ढंग की घुड़दौड़. मेरा बड़ा मन करता कि मैं उसमें शामिल होऊं, मगर कोई बढ़िया घोड़ा मेरे पास था नहीं.

मेरी नजर अपने चाचा के घोड़े पर ठहरी. वह घोड़ा बड़ा पानीदार था. मगर वह अड़ियल भी कम नहीं था. सिवा चाचा जी के वह किसी अन्य को अपनी पीठ पर बैठने ही न देता. अभी मैं बच्चा ही था. लेकिन सोच

रहा था—कितनी अच्छी घुड़सवारी आती है मुझे! चाचा जी का घोड़ा मैं अवश्य संभाल लूंगा.

और मैं उस घोड़े को चुपके से खोल कर खींचता हुआ, दौड़ के लिए तैयार सवारों की लाइन में जा लगा. फिर कूदकर सवार हो गया.

इशारा होते ही सारे घोड़े भाग चले. मेरा घोड़ा सर्र-सर्र करता आगे निकल गया. मेरी ख़ुशी की सीमा न रही. पहला इनाम मुझे अपनी जेब में ही रखा महसूस होने लगा.

मगर उसी समय घोड़े की तेजी इतनी बढ़ गयी कि संभालना मुश्किल! मुझे पसीना आ गया. घोड़े को धीमा करने की मेरी हर कोशिश नाकामयाब रही. घोड़े ने भी समझ लिया कि उसकी पीठ पर कैसा अनाड़ी बैठा हुआ है. क्रोधित होकर उसने जोरों से उछलना और हिनहिनाना शुरू कर दिया. मेरी हड्डियां हिल गयीं.

अचानक घोड़े ने ऐसी उछाल मारी कि क्षण भर के लिए मैं हवा में उड़ गया. अगले ही क्षण में एक कंटीली झाड़ी में जा गिरा. सौभाग्यवश, हड्डी नहीं टूटी. लेकिन अंग-अंग खरोंचों से भर गया और बदन का एक-एक जोड़ ढीला हो गया.

गुस्सैल घोड़ा न जाने कहां भाग गया था. चाचा जी ने उसकी खोज दूर-दूर तक करवायी, तब जाकर बरामद हुआ. मैंने बिस्तर पकड़ लिया. चाचा जी ने पहले तो मुझे बहुत डांटा, फिर प्यार से समझाते हुए कहा, "बलराज! (यही मेरा असली नाम है) साहस एक अच्छा गुण है. मगर अच्छा गुण भी यदि जरूरत से ज्यादा हो, तो बुरा होता है. मौत आज तुम्हें छूती हुई निकल गयी. दुबारा ऐसा दुस्साहस न करना."

लेकिन बच्चो, दुस्साहस तो मेरी रग-रग में है. मैं उस पर काबू पा ही नहीं सकता. फिल्मों में तुम मुझे जैसे दुस्साहसी व्यक्ति के रूप में देखते हो, वैसा ही दुस्साहसी मैं निजी जीवन में भी हूं.

यादों के तार झनझना उठे हैं . . . . उस दिन——

मैं बंबई के गेट वे ऑफ इंडिया के पास खड़ा था. हवा जोरों से चल रही थी. समुद्र उछल रहा था. उन दिनों मैं बंबई की बस-सर्विस 'बेस्ट' में मामूली नौकरी कर रहा था, ताकि कालेज की पढ़ाई का खर्च निकलता रहे. अचानक 'बचाओ! बचाओ!' की पुकार सुनायी पड़ी. देखता क्या हूं कि तूफानी समुद्र में एक आदमी गिर पड़ा है और डूब रहा है.

सैकड़ों आदमी मौजूद थे. लेकिन डूबते को बचाने के लिए किसी ने भी समुद्र में छलांग न लगायी. आखिर मुझसे न रहा गया. मैंने समुद्र में छलांग लगा दी.

अगले ही क्षण, मैं भी डूबने लगा. कारण? मुझे ठीक से तैरना आता ही नहीं था. जोश में मुझे याद ही नहीं रहा कि स्वयं मैं डूब सकता हूं!

लेकिन मेरा कूदना व्यर्थ न गया. लोगों ने जब देखा कि एक अनाड़ी नौजवान तूफानी समुद्र में छलांग लगा चुका है और डूबने भी लगा है, तो सब मानो सोते से जागे. किसी ने मेरी तरफ एक धोती फेंकी. मैंने उसे पकड़ लिया. मुझे बाहर खींच निकाला गया. जो आदमी पहले से डूब रहा था, उसे बचाने के लिए भी दो-तीन व्यक्ति समुद्र में कूद चुके थे. मेरे साथ-साथ उसे भी निकाला गया.

उस घटना से मैंने एक फैसला कर

लिया कि तैरने की कला में जल्दी-से-जल्दी माहिर हो जाना है.

आज भी मैं तैराकी का जबर्दस्त शौकीन हूं. यह कला न केवल एक शानदार कसरत है, बल्कि मौका पड़ने पर इससे दूसरों की और खुद अपनी भी जान बचायी जा सकती है. जिन बच्चों को तैराकी नहीं आती, उन्हें मेरी नेक सलाह यही है कि वे इस कला की उस्तादी हासिल करने में जरा भी देरी न करें.

●

यादों के तार अभी भी झनझनाते जा रहे हैं .....

एक बार मैं फिल्म की शूटिंग के लिए आउटडोर पर गया था. उसके एक सीन में मुझे तीस-चालीस फीट की ऊंचाई पर एक छप्पर से दूसरे छप्पर पर कूदना था. आम तौर पर ऐसी खतरनाक शूटिंग में हीरो की बजाय उसका कोई हमशक्ल आदमी भाग लेता है, जिसे 'डुप्लीकेट' कहते हैं, मैंने फिल्म के निर्देशक से कहा, "मैं स्वयं कूदूंगा. डुप्लीकेट के कूदने से सीन में सच्चाई नहीं आयेगी."

अब संयोग देखो कि ज्यों ही मैं दूसरे छप्पर पर कूदा, त्यों ही वह टूट गया! तीस-चालीस फीट की ऊंचाई से मैं अररर धम्म! चारों तरफ हाहाकार मच गया. लोग दौड़ते हुए आये और मुझे उठाने लगे, मेरी टांगें टूट चुकी थीं! स्ट्रेचर पर लादकर मुझे अस्पताल पहुंचाया गया.

वहां मेरी खैर-खबर पूछने वालों की लाइन लग गयी. सबने मुझे यही उपदेश दिया कि मैंने उस खतरनाक सीन में अपने डुप्लीकेट को भाग क्यों नहीं लेने दिया.

मैंने मुस्करा कर सबसे यही कहा, 'अरे, तो क्या हुआ! छप्पर टूटने से ही गिरा हूं न, सीढ़ियों पर फिसलकर तो नहीं.'

ठीक उन्हीं दिनों फिल्म जगत के दो प्रख्यात व्यक्ति सीढ़ियों पर फिसलकर गिरे थे और उनकी टांगें टूट गयी थीं. एक थे अभिनेता मनोज कुमार और दूसरे थे गीतकार आनंद बख्शी.

मेरा जवाब अपने-आप मनोजकुमार और आनंद बख्शी के साथ जुड़ गया. लोग सुनकर मुस्करा पड़ते.

ऐसे न जाने कितने किस्से मेरे पास हैं. फिर कभी मौका मिला, तो अवश्य सुनाऊंगा. फिलहाल इन शब्दों के साथ चिट्ठी समाप्त करता हूं कि कायर और कमजोर कभी मत बनो. हमेशा दिलेर और दमदार बनो.

तुम सबका प्यारा
सुनीलदत्त

58, पाली हिल, बांद्रा पश्चिम, बंबई-50

(प्रस्तुतिः म.)

आखिरी तरीका

एक युवक किसी धनवान व्यक्ति के पास पहुंचा और उसके हाथ अपनी पुस्तक 'धन कमाने के एक हजार तरीके' बेचने का प्रयत्न किया. धनवान आदमी ने पुस्तक न खरीदी. कुछ दिन बाद धनवान व्यक्ति ने उस युवक को सड़क के किनारे खड़े भीख मांगते देखा तो हैरान होकर पूछा—"आपने 'धन कमाने के हजार तरीके' नाम की पुस्तक लिखी थी. धन प्राप्त करने के लिए आपने उनमें से ही कोई तरीका क्यों न आजमाया?"

युवक ने उत्तर दिया—"उस पुस्तक में दिया हुआ आखिरी तरीका भीख मांगना ही तो है!"

□ अजीज कुरैशी

बुद्धि जिंदाबाद

गिरिराज जोशी

मांडलगढ़ का राजा चंद्रजीत सेन और उसका प्रधान मंत्री प्रतापनारायण चंद्र बड़े प्रसिद्ध थे. राजा और मंत्री का प्रेम भाइयों से भी बढ़कर था. राजा जहां भी जाते, मंत्री को साथ ले जाते. उसकी हर बात मान जाते, क्योंकि मंत्री बड़ा विद्वान, राजनीति का पंडित और दूरदर्शी था.

एक बार बातों ही बातों में राजा ने मंत्री से पूछा कि मंत्री जी बुद्धिमान की जीत होती है या धनवान की. मंत्री ने तत्काल उत्तर दिया कि महाराज, यह तो सब जानते हैं कि सदैव बुद्धि की ही विजय हुई है और होती रहेगी. लेकिन राजा ने कहा कि विजय धनवान की होती है, क्योंकि इंसान पैसे के बल पर सबको खरीद सकता है, यहां तक कि बुद्धि को भी. पर मंत्री न माना. इस पर राजा ने कहा कि मैं एक धनवान आदमी को बुलवाता हूं और तुम एक बुद्धिमान आदमी को लाओ. दोनों की परीक्षा लेंगे, जो खरा उतरेगा, विजय उसी की मानी जायेगी.

राजा ने अपने शहर के सब से धनवान सेठ मानचंद शाह को इस परीक्षा के लिए बुलाया. उधर मंत्री जब उदास-उदास अपने घर पहुंचा तो उसके लड़के बुधिया ने उसकी उदासी का कारण पूछा. सारी बात जानकर बुधिया ने कहा कि मैं इस परीक्षा के लिए तैयार हूं. मंत्री ने अपने पुत्र को बहुत मना किया, लेकिन वह नहीं माना. दूसरे दिन राजा की ओर से नगरसेठ मानचंद शाह और मंत्री की ओर से उस का पुत्र बुधिया दरबार में आये.



महाराजा ने अपने अधीन राजा के नाम एक पत्र लिखकर सेठ को दिया और कहा कि आप दोनों यह पत्र लेकर नवलगढ़ के राजा के पास चले जाओ. उन्हें यह पत्र देना और वह जो भी काम बतायें, उसे पूरा करके वापस आ जाना. यह पत्र गोपनीय है. इसको पढ़ने की कोशिश मत करना.

दोनों रवाना हुए. सेठ जी तो उस पत्र की ओर से बिल्कुल निश्चिन्त थे, क्योंकि वह पत्र तो नवलगढ़ पहुंचने पर ही वहां के राजा को देना था. लेकिन बुधिया उस पत्र

को पढ़ना चाहता था. एक रात मौका पाकर चुपचाप उसने वह पत्र पढ़ लिया और वापस सेठ जी के पास रख दिया.

चलते-चलते दोनों नवलगढ़ जा पहुंचे. वहां जाकर सेठ ने राजा को अपने महाराजा का पत्र थमा दिया. राजा ने पत्र देखते ही अपने जल्लादों को हुकम दिया कि इन दोनों को फांसी के फंदे पर लटका दो. सेठ की तो सिट्टी-पिट्टी गुम हो गयी. जल्लाद दोनों को पकड़कर ले गये.

वहां पहुंचकर सेठ ने जल्लादों को तरह-तरह का लालच दिया. यहां तक कि वह एक लाख रुपये देने को तैयार हो गया. लेकिन वे जल्लाद कहां मानने वाले थे. जल्लादों ने सेठ को इतनी मिन्नतें करते देखा, जबकि दूसरी ओर वह छोकरा शांत खड़ा था. और बार-बार कह रहा था कि पहले मुझको फांसी लगा दो. इस पर जल्लादों ने पूछा कि क्या कारण है कि तुम उम्र में कम होने पर भी पहले फांसी लगाने के लिए कह रहे हो.

बुधिया ने बताया कि जिस स्थान पर हम दोनों को फांसी लगेगी, वहां १६ वर्ष तक लगातार भयानक अकाल पड़ेगा. लोग दाने-दाने के लिए मोहताज हो जायेंगे. कुओं में पानी सूख जायेगा और सारा राज्य तहस-नहस हो जायेगा. इसी कारण से मांडलगढ़ के राजा ने हमको यहां भेजा है. हमने अनजाने में महाराज का अपमान किया था. इसलिए फांसी की सजा दी गयी. लेकिन राजपुरोहित ने इस सजा का भयंकर परिणाम बताया, तो महाराज ने यह बला तुम्हारे राजा के सिर पर डाल दी.

यह सुनते ही जल्लाद तत्काल राजा के पास पहुंचे और उन्हें सारी बात बतायी. राजा बड़ा चिंतित हुआ. एक तरफ कुआं तो दूसरी तरफ खाई. अपने से बड़े राजा का हुकम न माने तो वह राज्य को तहस-नहस कर दे और माने तो अपने ही हाथों अपने राज्य का सत्यानाश हो. हार कर उसने अपने राजपुरोहित को बुलाया और उसे सारी बात कह सुनायी. पुरोहित जी ने अपनी पोथी संभाली और हिसाब लगाकर देखा. फिर गंभीर होकर कहा कि महाराज उस छोकरे की बात सोलह टके सही है. अगर इनको यहां फांसी दी गयी तो राज्य में भीषण अकाल पड़ेगा. वास्तव



अगला अंक

शहरों के शहर लखनऊ में सनसनी फैल गयी
एक अवध बाप अचानक घर से गायब
हर तरफ हंगामा, हर तरफ खलबली
जितने मुंह उतनी बातें
सच्ची, लेकिन ठहाकेदार रपट पढ़ना
के. पी. सक्सेना की कलम से
उनके नये उपन्यास
'भागे हुए डैडी' में जो

पराग

के जुलाई अंक से शुरू हो रहा है.

- "मैं गुनहगार हूं मास्टर जी, असली गुनहगार मैं ही हूं और मैं रो पड़ा." कौन था यह गुनहगार और उसका गुनाह क्या था? **[illegible] रसेंद्र** की हृदय को छूने वाली मार्मिक कहानी **'गुनहगार'**.
- "आपका आपकी तरफ और मेरा मेरी तरफ. . . ." लल्लन बाबू का फैसला था और शंभु ने जब इसी आधार पर ईंट का जवाब पत्थर से दिया तो लल्लन बाबू तिलमिलाकर रह गये. **रचना भारती** की कहानी—**'तेरी मेरी का चक्कर'**
- "पहले अपनी पीठ पर लदे इस बोझ से छुटकारा पाओ, तभी प्रभु के दर्शन होंगे." क्या था वह बोझ, जिसे उतार फेंकने से दस्युराज महात्मा बन गये. **भूपेंद्र अबोध** की कहानी **'बोझ से छुटकारा.'**
- कौन ज्यादा सुंदर है? इस बात को लेकर मोर और कौए में ठन गयी. लेकिन नतीजा क्या हुआ? उत्तर देगी **घनश्याम देसाई** की एक रोचक गुजराती कहानी **'खूबसूरती का चक्कर.'**

—और. . . ये तो मात्र झलकियां हैं असली मजा तो इन कहानियों को पढ़कर ही मिलेगा. और कहानियों के साथ में—

- विदेश मंत्री जी के साथ अपने एक पड़ोसी देश की सैर.
- फिल्मी कोना में मनोजकुमार की समझदारी का सुंदर नमूना.
- सभी स्थायी स्तंभों में रोचक सामग्री.

कपट की... (पृष्ठ २७ से आगे)

राज अगर आप इस दासी को कुछ देना ही चाहते हैं तो मेरी एक अर्ज है. आपकी सभा में एक चोर है, उसे प्राणदंड दीजिए. राजा ने कहा, बताओ कौन है वह? चंद्रप्रभा ने झट से मदनसेन की ओर इशारा कर दिया. राजा ने हुक्म दिया कि इस आदमी को मौत की सजा दी जाये. मदनसेन बोला कि महाराज, आप मुझे सजा दना चाहते हैं, तो यह गर्दन हाजिर है. लेकिन मैं कतई बेकसूर हूं. राजा बोला कि हम कैसे मान लें कि तुम बेकसूर हो और यह नाचने वाली झूठी है.

मदनसेन बोला कि महाराज, इसका फैसला तो अभी हो जायेगा. इस नर्तकी को मैंने अपनी कोई चीज दी है. यह हाथ में पानी लेकर यह कह दे कि मदनसेन ने मुझे जो चीज दी है, वह मैं लौटा रही हूं, तो झूठ-सच का अभी पता चल जायेगा. राजा ने चंद्रप्रभा की ओर देखा. चंद्रप्रभा बोली कि मैं तैयार हूं.

बस फिर क्या था. जैसे ही चंद्रप्रभा ने हथेली पर पानी लेकर कहा कि मैं मदनसेन की दी चीज इसी समय लौटा रही हूं और पानी मदनसेन की हथेली पर छोड़ा कि वह निर्जीव होकर गिर पड़ी. महफिल में सभी लोग हक्के-बक्के रह गये. राजा ने मदनसेन से पूछा कि यह सब क्या माजरा है. मदनसेन बोला कि महाराज यह मेरी पत्नी थी. और उसने अपनी सारी दास्तान राजा को सुना दी. राजा मदनसेन से बहुत खुश हुआ. उसने मदनसेन को प्यार से अपने पास बिठाया और उसके साथ अपनी बेटी की शादी कर दी ✻

(किस्सा तोता-मैना से तोते की कही एक दास्तान)

शेखचिल्ली... (पृ. ५१ से आगे)

शेखचिल्ली को समझा गये कि कोई खतरा दिखाई दे, तो हमें इशारा कर देना.

शेखचिल्ली वहीं सेंध के पास बैठकर पहरा देने लगे. थोड़ी देर बाद उन्हें कुछ दूर पर एक सिपाही आता हुआ दिखायी दिया. यद्यपि सिपाही की नजर शेखचिल्ली पर न पड़ी, लेकिन वे उसे देखते ही घबरा गये. सोचने लगे कि चोरों को किस तरह इशारा करें. जब समझ में कुछ न आया, तो वे जोर-जोर से गाने लगे. सिपाही चौंका—आधी रात को महल के पीछे कौन गा रहा है? यह जानने के लिए कई सिपाही उस ओर दौड़ पड़े. देखा तो शेखचिल्ली दीवाल से टिके हुए गा रहे हैं.

महल की दीवाल टूटी हुई देखकर सिपाही सब कुछ समझ गये. चोरों को महल के अंदर ही रंगे हाथों गिरफ्तार कर लिया गया.

दूसरे दिन जब चोरों को और शेखचिल्ली को राजा के सामने पेश किया गया, तो राजा ने शेखचिल्ली से रात को महल के पीछे गाने का कारण पूछा. शेखचिल्ली ने डर के मारे सब हाल सच-सच सुना दिया. राजा के होंठों पर मुस्कराहट आ गयी. उसने शेखचिल्ली को माफ कर दिया, क्योंकि उसी की वजह से वे खतरनाक चोर पकड़े गये थे.

राजा इन चोरों से परेशान हो गया था. वे बार-बार चोरी करते थे. सजा पाने पर भी किसी तरह नहीं मानते थे. इसलिए अब की बार राजा ने उन्हें कोड़े लगवाये और हमेशा के लिए अपने राज्य से निकाल दिया. ✻

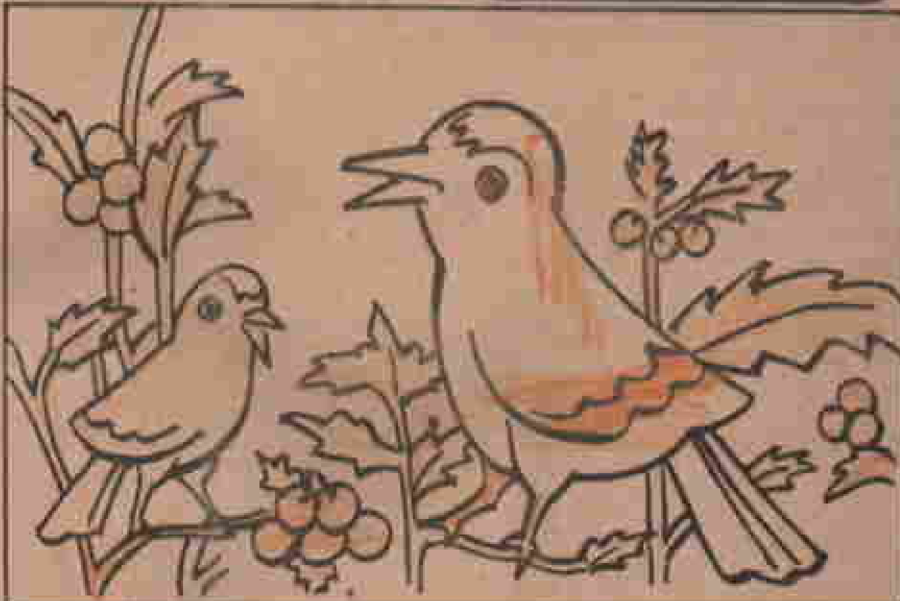
30/10, साउथ टी. टी. नगर भोपाल (म.प्र.)

पराग कैमल रंग प्रतियोगिता

निःशुल्क प्रवेश

पहला भव्य पुरस्कार . १००रु.
दूसरा भव्य पुरस्कार . ७५रु.
तीसरा भव्य पुरस्कार . ५०रु.
प्रोत्साहन पुरस्कार १०, प्रत्येक २५ रु.
योग्यता प्रमाण पत्र २०

यहां से काटिए



यहां से काटिए

नाम .... उम्र ....

पता ....

चित्र भेजने की अंतिम तिथि—20 जून, 1978.

केवल 12 वर्ष तक के बच्चे ही इस प्रतियोगिता में शामिल हो सकते हैं. ऊपर दिये गये चित्र में अपने मनचाहे कैमल रंग भरकर चित्र इस पते पर भेजिए :—

संपादक पराग—कैमल रंग प्रतियोगिता नं. सत्ताइस, 10 दरियागंज, नयी दिल्ली-110002.

..........................यहां से काटिए..........................

हरदम रखना दमखम



□ कीर्तिकुमार सिंह

बूंद-बूंद से सागर बनता,
कण-कण से है धरती,
पल-पल बीत-बीत कर ही
है सारी उमर गुजरती।
क्षण-क्षण व्यर्थ नहीं जाने दो
सदुपयोग हो हरदम,
डटकर खूब परीक्षा देना,
हरदम रखना दमखम!

इन्हें याद करो

चिड़िया रानी

चिड़िया रानी बोलो तुमको
किसने उड़ना सिखलाया?
किसने चूँ-चूँ गाना सीखा
प्यारा रूप कहाँ पाया?

हमको भी उड़ना सिखला दो
हम भी मौज उड़ायेंगे;
साथ तुम्हारे उड़ते उड़ते
चूँ-चूँ कर के गायेंगे.

ईना बीना

ईना-बीना गर्म महीना
सूरज जी ने ताना सीना
ईना-बीना ताप कमीना
मुश्किल कर रखा है जीना
ईना-बीना ढेर पसीना
ठंडा पानी पड़ता पीना
ईना-बीना बढ़िया जीना
छुट्टी भी है डेढ़ महीना

□ राजेश कुमार पुरी

आपसे मिलिए



मिस





हकीम की हिकमत

□ ज्योत्सना आनंद.

पुराने जमाने की बात है. फारस देश में एक बादशाह राज्य करता था. उसे कोढ़ का बड़ा पुराना रोग था. बादशाह ने अपने राज्य के सभी बड़े-बड़े वैद्यों-हकीमों का इलाज कराया, पर कोई भी उसे अच्छा न कर सका. हर ओर से निराश होकर बादशाह दिन-रात अपने महल में अकेला पड़ा रहता. दरबार में जाना भी उसने छोड़ दिया.

फिर एक रोज किसी दूसरे देश से एक हकीम घूमता-घामता वहां आ पहुंचा. देखने में वह फटे-हाल था, लेकिन उसे अपनी विद्या में कमाल हासिल था. उसने भी बादशाह की भयंकर बीमारी के बारे में सुना और यह भी जाना कि कोई उसका इलाज नहीं कर पाया है.

अगले ही रोज वह बादशाह के दरबार में हाजिर हुआ और उसे भला-चंगा करने की पेशकश की. खबर मिलते ही बादशाह ने उसे बुला भेजा और पूछा कि ऐ परदेसी हकीम, यहां के अच्छे-से-अच्छे वैद्य-हकीम मुझे ठीक नहीं कर सके,





तू कैसे मेरा रोग दूर करेगा. हकीम ने कहा कि बादशाह सलामत, अगर मैं आपको ठीक कर दूं तो?

बादशाह ने जवाब दिया—तो मैं तुझे मुंह-मांगा इनाम और इज्जत बख्शूंगा.

बादशाह से इजाजत लेकर हकीम घर चला आया. उसने एक गेंद और एक लकड़ी की खोखली थपकी तैयार की. फिर उसने कुछ दवाओं का चूर्ण बनाया और ठूंस-ठूंस कर थपकी में भर दिया.

अगले रोज गेंद और थपकी लेकर वह हकीम फिर बादशाह के सामने हाजिर हुआ. उसने बादशाह से कहा कि हुजूर, बिस्तर छोड़िए और गेंद खेलने के कमरे में चलिए. खुदा ने चाहा तो आप जल्दी ही इस मर्ज से छुटकारा पा जायेंगे. यह सुनते ही बादशाह उठ खड़ा हुआ और हकीम के साथ चल पड़ा. गेंद खेलने के कमरे में पहुंच कर हकीम ने कहा कि जहांपनाह, इस थपकी और गेंद से देर तक खेलिए. खूब पसीना आने पर गरम पानी में गुसल कीजिएगा.

हकीम के इस इलाज से बादशाह भला-चंगा हो गया.

अब तो बादशाह पर हकीम का सिक्का जम गया. वह हकीम को लेकर अपने दरबार में आया. इतने दिनों बाद खुशी से चमकते-दमकते बादशाह को दरबार में आया देख सभी लोग बादशाह को मुबारकबाद देने लगे.

बादशाह ने सबके सामने हकीम की तारीफों के पुल बांधते हुए कहा कि इन हकीम साहब ने ही मेरे रोग को दूर किया है. मैं इनके अहसानों का बदला तो नहीं चुका सकता, पर इन्हें अपने दरबार में इज्जतदार ओहदा देता हूं. इनकी तमाम उम्र सुख-चैन से गुजरे, इसके लिए इन्हें हर महीने १००० दीनारें राजकोष से मिलेंगी. इतना कहकर बादशाह अपने सिंहासन पर जा बैठा और हकीम साहब का हाथ पकड़कर उन्हें भी अपने पास बैठा लिया.

लेकिन बादशाह के वजीरे आजम को यह बात नागवार गुजरी कि बादशाह हकीम का इतना मान-सम्मान करें. वह बड़ा ईर्ष्यालु और दूसरों का बुरा देखने वाला था. एक दिन एकांत पाकर उसने बादशाह से कहा कि जहांपनाह, आप एक विदेशी हकीम पर इतना विश्वास न करें. हो सकता है कि वह जासूस हो और भेद लेने के लिए यहां आया हो.

बादशाह ने नाराज होते हुए कहा कि ऐ वजीर, लगता है, तू उस हकीम से जलता है. इसी लिए उसके बारे में ऐसी मनगढ़ंत बातें कह रहा है.

वजीर ने झुककर नम्रता से अर्ज किया कि हुजूर मुझ पर खफा न हों, मैंने इस बात की तहकीकात कर ली है कि वह हकीम हमारे राज्य का ही नहीं, बल्कि, आपकी जान का दुश्मन भी है. मौका पाते ही वह आपको मार डालेगा.

बादशाह को अब भी भरोसा न हुआ. वह बोला कि अगर वह मुझे मारना चाहता, तो उसने मुझे अच्छा ही क्यों किया. वह मुझे पहले ही मार सकता था.

वजीर ने जवाब दिया कि आपका

विश्वास जीतने के लिए ही उसने ऐसा किया, ताकि उसका काम आसान हो जाये.

अब बादशाह् वजीर की बातों में आ गया. उसने अपने दिमाग के दरवाजे तो बंद कर दिये और वजीर के दिमाग से सोचने लगा. वजीर ने कहा कि हुजूरे-आला, इसका एक ही उपाय है कि आप हकीम को कत्ल करा दें. वरना यह आस्तीन का सांप किसी भी दिन काट लेगा. आपने मेरी बात अब भी न मानी तो बाद में पछतायेंगे. यह कहकर वजीर चलता बना.

बादशाह् ने हकीम को बुलवा भेजा. हकीम तुरंत हाजिर हुआ और बादशाह को झुककर सलाम करते हुए उसने पूछा कि जहांपनाह, आपने गुलाम को किस लिए याद किया है. बादशाह ने जवाब दिया कि ऐ हकीम, आज हमें पता चला कि तू जिस थाली में खाता है, उसी में छेद करना चाहता है. तू इस फिराक में है कि मौका पाते ही हमारी जान ले ले. जा, मैं तुझे मौत की सजा देता हूं.

हकीम को काटो तो खून नहीं. भय से थरथराते हुए कहने लगा कि बादशाह सलामत, जरूर किसी ने आपके कान भरे हैं. मैंने तो कभी किसी का बुरा नहीं चाहा और हुजूर, आपकी जान लेने की बात तो मैं सपने में भी नहीं सोच सकता. किसी ने आपसे गलत कहा है. मैं बेकसूर हूं. इस तरह बेचारा हकीम बहुत रोया-गिड़गिड़ाया. पर बादशाह ने उसकी एक न सुनी.

जब हकीम ने देखा कि अब उसे मरने से कोई नहीं बचा सकता, तो उसने बादशाह से एक बार फिर विनती की कि हुजूर, मेहरबानी करके मुझे एक रोज का समय दे दीजिएगा, ताकि मैं अपनी धन-दौलत और किताबों को वसीयत कर सकूं. मेरे पास बहुत पुराने और अच्छे-अच्छे ग्रंथ हैं. उनमें एक अद्भुत किताब है, जिसे मैं हुजूर को भेंट कर दूंगा.

बादशाह ने उत्सुकता से पूछा कि ए हकीम, उस किताब में ऐसी क्या खूबी है?

हकीम ने बताया कि जहांपनाह, वह किताब एक रेशमी कपड़े में लिपटी हुई है. उस कपड़े को साफ-सुथरी तश्तरी में रखकर जब आप उसपर मेरा कटा हुआ सिर रखेंगे तो उससे खून बहना बंद हो जायेगा. तब आप किताब का छठा पन्ना खोलकर बायीं तरफ लिखी तीसरी पंक्ति पढ़कर मेरे कटे हुए सिर से जो सवाल पूछेंगे, वह सिर उसका माकूल जवाब देगा.

यह सुनकर बादशाह हैरत में आ गया. उसने पूछा कि क्या वाकई ऐसा होगा. हकीम ने जवाब दिया कि हुजूर, बिल्कुल ऐसा ही होगा. लेकिन मैं बेगुनाह हूं. मुझे माफ कर दें. मैं फौरन यह राज्य छोड़कर दूर चला जाऊंगा.

लेकिन अब तो बादशाह पर किताब का करिश्मा देखने की धुन सवार हो गयी. वह बोला कि ऐसा नहीं हो सकता. हम तुझे एक दिन की मोहलत देते हैं. तू कल वह किताब लेकर हमारे सामने हाजिर होना. हम यह तमाशा जरूर देखेंगे.

लाचार होकर हकीम घर चला गया और अपना काम पूरा करके अगले रोज वह किताब लेकर बादशाह के पास आया.

वह किताब वाकई एक खूबसूरत रेशमी कपड़े में लिपटी थी. हकीम ने अदब से उसे बादशाह की नजर कर

दिया. बादशाह ने फाड़ा एक तश्तरी में रखकर किताब अपने हाथ में ले ली. बादशाह के इशारे की देर थी और हकीम का सिर तलवार के एक ही वार से जमीन पर आ गिरा. फौरन एक खिदमतगार ने कटा हुआ सिर उठाकर तश्तरी में कपड़े पर रख दिया. बादशाह यह देखकर बड़ा हैरान हुआ कि वाकई कटे हुए सिर से खून बहना बंद हो गया. उसकी आंखें खुल गयीं और वे सीधे बादशाह को देखने लगीं.

फिर वह सिर बोला कि ऐ बादशाह, किताब का छठा पन्ना खोल और पूछ तुझे क्या पूछना है. बादशाह ने उन पन्नों को उलटना चाहा, लेकिन वे आपस में इस तरह जुड़े हुए थे कि आसानी से

माथापच्ची

सिपाही को देखकर चोर टेढ़े-मेढ़े रास्ते से भागा. पर दुर्भाग्य से वहीं आ निकला, जहां से भागा था. बताओ वह किस रास्ते से भागा?

चित्र : वासुदेव 'सिधु-भारती'



पलटे न गये. तब बादशाह थूक से उंगली गीली करके एक-एक पन्ना उलटने लगा. छठा पन्ना खोलने पर उसने बायीं तरफ नजर दौड़ायी, तो वहां कुछ भी न लिखा था. बादशाह ने कहा कि इस पर तो कुछ नहीं लिखा. इस पर वह हकीम का सिर बोला कि और पन्ने पलटो. आगे कुछ लिखा हुआ मिलेगा.

बादशाह उसी तरह उंगली पर थूक लगा-लगाकर पन्ने पलटने लगा. धीरे-धीरे उसे लगने लगा कि उसकी आंखों के आगे अंधेरा छा रहा है. शरीर में जलन हो रही है. हाथ-पांव डगमगाने लगे हैं.

उसकी समझ में न आया कि एकाएक उसे यह क्या हो रहा है. तभी वह सिर बोला कि ऐ बादशाह, तू बड़ा जालिम और अहसानफरामोश है. मैंने तेरे साथ नेकी की और बदले में तूने मुझे मौत दी. तो सुन, तू भी बचेगा नहीं. इस किताब के पन्ने जहरीले हैं और यह जहर उंगली के जरिये तेरे शरीर में पहुंच गया है. तूने अपना भला करने वाले पर भरोसा न करके दूसरों की झूठी बातों पर कान दिया और अपने दिमाग से काम न लेकर दूसरों की सलाह पर बिना सोचे-विचारे मुझ बेकसूर को मौत के घाट उतार दिया. इसलिए ले, अपने गुनाहों की सजा भुगत. अब तुझे कोई नहीं बचा सकता.

सिर की बात खत्म होते-न-होते बादशाह के हाथ से किताब गिर गयी और वह जमीन पर लुढ़क गया. उसकी आंखें हमेशा के लिए मुंद गयीं. उस सिर की आंखें भी इस तरह बंद हो गयीं, मानो वह शान से सो गया हो.

(किस्सों की मशहूर अरबी किताब 'अलफ-लैला' से)

एक चित्र कथा

हाय राम, मेरे बच्चे कहां गये!





(विदेशी भाषा प्रकाशनगृह, मास्को के सौजन्य से)

गाता पेड़ ... (पृ. १४ से आगे)

देखा न गया. वे ईर्ष्या की आग में जलने लगीं. उन दोनों ने मनगढ़ंत कहानी गढ़ी थी. इन बच्चों को नदी में फिकवा दिया था. कोतवाल ने इन्हें पालपोस कर बड़ा किया. ये आपके ही बच्चे हैं.

सुलतान ने अपने बच्चों को गले से लगा लिया और कहा—पक्षी, मैं तुम्हारा बेहद शुक्रगुजार हूं. तुमने मेरी आंखें खोल दीं. ये मेरे बच्चे हैं, इसी लिए इन पर मेरा प्यार उमड़ रहा था.

सुलतान बच्चों को लेकर सुलताना के पास पहुंचा. सुलतान ने उसे सारी बात बता दी और बार-बार उससे माफी मांगने लगा. सुलताना की आंखों से आंसू बहने लगे, पर अपने बच्चों को पाकर वह खुशी से झूम उठी. सुलतान बड़ी इज्जत से सुलताना को महल में ले आया. उसकी दोनों बहनों को उसने देश निकाला दे दिया. उन दोनों को अपने किये की सजा भुगतनी पड़ी.

(किस्सों की मशहूर अरबी किताब 'अलफ-लैला' से)

5/8 नंद भवन, जवाहर नगर,
स्वामी विवेकानंद मार्ग, प. गोरेगांव, बंबई-62

लघु विज्ञापन

एक कैमरा जो
१००/- रु० से कम का
नहीं है

आप केवल
३६/- रु०
में ही उसे
खरीद सकते हैं



विकास
कैमरा

सेठी स्टुडियो

चित्रकला



चित्रकला को
घर में रहकर
डाक द्वारा आप
सीख सकते हैं। हिन्दी भाषा
में पाठों को भेज देंगे।

SANTHANU'S CHITIRA VIDYALAYAM
C O CHITIRA KULLAR (P)
MADRAS-600 002

स्टैम्प



हरिदास प्रजापति

रेट कार्ड के लिये लिखें

भारत में पहली बार

बॅटरीसे चलनेवाली
रिमोट कंट्रोल मॉडिलट्रेन HO GAUGE



इलेक्ट्रॉनिक टॉईज (भारत)
३७, बी. टी. कंम्पाउंड मलाड (पश्चिम)
बम्बई ४००,०६४. फोन ६९६१२५